ऋग्वेद

ओ३म्

यजुर्वेद

पवमान

(मासिक)

वर्ष : 35 पौष-माघ वि0स0 2079 अंक : 1 जनवरी 2023

मुद्रक: सरस्वती प्रेस, देहरादून वजन: 50 ग्राम

पंजाब केसरी लाला लाजपत राय

(28 जनवरी 1865 से 17 नवम्बर 1928)

सामवेद

वैदिक साधन आश्रम तपोवन, नालापानी, देहरादून-248008

अथर्ववेद

पवमान पत्रिका हमारी वेबसाइट www.vaidicsadhanashramdehradun.com पर भी उपलब्ध है।

karix
connect • interact

Transforming the way businesses communicate & interact with their customers

Karix empowers organisations to enable smarter, relevant, and personalised conversations with their customers and create seamless customer experiences, across the globe. Purpose-built for enterprises, Karix offers a rich suite of communication channels with superior security standards, unmatched customer support and a reliable cloud-based platform to support all communication needs.

21+
years of industry experience with a stronghold in all major industries

2,000+
Enterprise customers

100+ BN
Omni-channel messages processed annually

24x7
Support provided by over 200 engineers

10,000+
Business processes supported

CUSTOMER ENGAGEMENT SOLUTIONS SUITE

- WhatsApp
- A2P Messaging
- Email
- RCS
- Voice
- Marketing Automation
- Campaign Automation
- Chatbots
- Live Agent Chat

WHY DO FORTUNE 1000 BUSINESSES PREFER KARIX?

- Best in class connectivity
- High available systems
- Hybrid cloud infrastructure
- Deep domain understanding

For more details, visit us at www.karix.com or write to us at marketing@karix.com

ओ३म्

पवमान

वर्ष–35 अंक–1

पौष–माघ विक्रमी 2079 जनवरी 2023

सृष्टि संवत् 1,96,08,53,123 दयानन्दाब्द : 198

★

–: संरक्षक :–
स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती
मो. : 9410102568

★

–: अध्यक्ष :–
श्री विजय कुमार
मो. : 9837444469

★

–: सचिव :–
प्रेम प्रकाश शर्मा
मो. : 9412051586

★

–: आद्य सम्पादक :–
स्व0 श्री देवदत्त बाली

★

–: मुख्य सम्पादक :–
डॉ० कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री
अवैतनिक
मो. : 9336225967

★

–: सहायक सम्पादक :–
अवैतनिक
मनमोहन कुमार आर्य–
मो. : 9412985121

★

–: कार्यालय :–
वैदिक साधन आश्रम, तपोवन,
तपोवन मार्ग, देहरादून–248008
दूरभाष : 0135–2787001
मोबाईल : 7895978734 (श्री चन्दन सिंह)

Email : vaidicsadanashram88@gmail.com
Web-www.vaidicsadhanashramdehradun.com

विषयानुक्रम

सम्पादकीय	डॉ. कृष्णकान्त वैदिक शास्त्री	2
वेदामृत	आचार्य डॉ. रामनाथ वेदालंकार	3
वैदिक–संस्कृति की प्राचीनता और महानता	डॉ. कृष्णकान्त वैदिक शास्त्री	4
क्या हम मनुष्य हैं ?	मनमोहन कुमार आर्य	7
अद्वितीय दानी, सेवा भावी एवं संस्था शिल्पी...	मनमोहन कुमार आर्य	10
ईश्वर की उपासना का फल मनुष्य को...	मनमोहन कुमार आर्य	14
सर्दियों के रोग	डॉ. भगवान दास	16
खांसी के लिए कुछ घरेलू नुस्खे	डॉ0 प्रेमदत्त पाण्डेय	18
आत्मा का हनन करने वाले अज्ञानमयी...	प्रो0 रामप्रसाद वेदालंकार जी	19
प्रथम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम और...	महेश कुमार शर्मा	21
आशीर्वाद	स्वामी विवेकानन्द परिव्राजक	28
मोक्ष से संबंधित प्रश्न का उत्तर	भगवान सिंह राठौर	30

वैदिक साधन आश्रम तपोवन, देहरादून के बैंक खातों का विवरण

दान हेतु बैंक खाते का नाम	बैंक का नाम व पता	बैंक अकाउन्ट नं.	IFSC Code
आश्रम को दान देने के लिये			
1. "वैदिक साधन आश्रम"	केनरा बैंक, क्लाक टावर ब्रांच देहरादून	2162101001530	CNRB0002162
पवमान पत्रिका शुल्क			
2. "पवमान"	केनरा बैंक, क्लाक टावर ब्रांच देहरादून	2162101021169	CNRB0002162
तपोवन विद्यानिकेतन स्कूल के लिये			
3. 'तपोवन विद्या निकेतन"	यूनियन बैंक, तपोवन रोड, नालापानी, देहरादून	602402010003171	UBIN0560243

पवमान पत्रिका में विज्ञापन के रेट्स

1. कलर्ड फुल पेज रु. 5000/– प्रति माह
2. ब्लैक एण्ड व्हाईट फुल पेज रु. 2000/– प्रति माह
3. ब्लैक एण्ड व्हाईट हॉफ पेज रु. 1000/– प्रति माह

सदस्यों के लिए पवमान पत्रिका के रेट्स

1. वार्षिक मूल्य रु. 200/– वार्षिक
2. 15 वर्ष (आजीवन) के लिए मूल्य रु. 2000/–

नोटः पवमान पत्रिका फुटकर विक्रय के लिए उपलब्ध नहीं है।

पवमान में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र देहरादून ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

सम्पादकीय

अनुकरण

अनुकरण का अर्थ है नकल करना। मनुष्य में अन्य जीवधारियों की तुलना में स्वाभाविक ज्ञान अत्यन्त कम होने के कारण वह शैशव अवस्था से ही अपने सभी नित्य कर्मों को बड़ों के अनुकरण के द्वारा ही सीखता है। जहां गाय आदि पशुओं के बछड़े पैदा होते ही कुलांचे भरने लगते हैं, वहां मनुष्य का बच्चा लगभग एक साल का होने पर ही अनुकरण के द्वारा चलना सीखता है। अगर किसी बच्चे को समाज से अलग करके रख दिया जाये तो वह किसी का भी अनुकरण कर सकने में असमर्थ होने के कारण असहाय और अज्ञान अवस्था में ही रह जायेगा। शिशु को किसी भी क्रिया को सीखने के लिए पूछने की आवश्यकता नहीं होती, वह केवल अन्य लोगों का अनुकरण कर सीख जाता है। अनुकरण के द्वारा ही हम अपनी मातृभाषा को सीख पाते हैं। समाज में उच्च श्रेणी के लोग जिस प्रकार का खान-पान, उठना-बैठना, व्यवहार आदि करते हैं, उसी की नकल करना चाहते हैं और यह नहीं सोचते कि इस प्रकार के व्यवहार हमारी जीवन पद्धति के अनुकूल हैं भी या नहीं। हम देखते हैं कि अनुकरण के लिए उस कार्य या व्यवहार का हमारे लिए अनुकूल होना भी आवश्यक है।

आज सारे संसार में इन्टरनैट के माध्यम से विभिन्न प्रकार की जीवन शैलियों और सांस्कृतिक आदान-प्रदान के कारण पाश्चात्य देशों के आचार-विचारों और तौर-तरीकों की नकल करने की होड़-सी लग गई है। हमें अपनी सभ्यता और संस्कृति के मूल तत्त्वों को सदा याद रखते हुए इस भेड़-चाल से अपने को बचाना चाहिए। हमें भावी पीढ़ी को इस प्रकार की शिक्षा देनी चाहिए कि वे स्वयं विवेकशील बनें और हमारी सभ्यता और सस्कृति के अनुसार ही अपना आदर्श स्थापित कर उनका अनुकरण करें।

आचार्य व्यास ने लिखा - ***'धर्मस्य तत्वंनिहितंगुहायाम् महाजनो येनगतः स पन्थाः।'*** यानी, धर्म का रहस्य अथवा स्वरूप इतना गहन है, मानो वह गुफाओं में छिपा है। अतः सभी उसका गहन अध्ययन नहीं कर सकते। सुगम मार्ग यही है कि जिन्होंने घोर तपस्या कर उस परम तत्व को जान लिया तथा जिस रास्ते वे चले, उसी मार्ग पर चलना चाहिए। ब्रह्मनिष्ठ संत-महात्माओं, ज्ञानियों और निर्मल हृदय वाले महापुरुषों के सत्संग के महत्व को प्रदर्षित करते हुए धर्मग्रंथों में कहा गया है कि सत्संग ही एकमात्र ऐसा सरल साधन है, जो अज्ञान और कल्पित भ्रामक धारणाओं से मुक्ति दिलाकर मानव जीवन के सर्वांगीण विकास का मार्ग प्रशस्त करने की क्षमता रखता है। सत्संग के सुयोग्य पात्र कौन हैं, इस पर प्रकाश डालते हुए बताया गया है, मन, वाणी और कर्म की एकरूपता रखने वाला, जिसका आचरण पवित्र है, जो किसी भी प्रकार के लोभ-लालच-मोह आदि से मुक्त परम जितेंद्रिय है, उसी महापुरुष का सत्संग करने से ज्ञान व भक्ति की प्राप्ति संभव है। महाभारत में कहा गया है - ***'यद्यदाचरितश्रेष्ठः तत्तदेबेतरोजनः स यत्प्रमाणंकुरुतेलोकस्तदनुवर्तते।।'*** उपरोक्त सद्गुणों से संपन्न श्रेष्ठ पुरुष जैसा आचरण करते हैं, उसी का अनुगमन करने से कल्याण होता है। स्वयं धन-संपत्ति की आसक्ति से आबद्ध, काम, क्रोध, लोभ जैसे दुर्गुणों से दूषित व्यक्ति के उपदेश का श्रोता पर अच्छा प्रभाव नहीं पड़ता है।

डॉ० कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री

वेदामृत

तेरी पूजा किसलिए ?

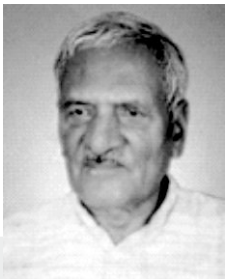

सुक्षेत्रिया सुगातूया, वसूया च यजामहे ।
अप नः शोषुचदघम् ।। ऋग्वेद १.९७.२

ऋषिः कुत्सः आंगिरसः। देवता शुचिः अग्निः वा। छन्दः गायत्री।।

[हे शुचि अग्नि प्रभु!] (सुक्षेत्रिया) उत्तम क्षेत्र की इच्छा से (सुगातूया) उत्तम मार्ग की इच्छा से (वसूया च) और निवासक ऐश्वर्य की इच्छा से (यजामहे) [हम आपकी] पूजा करते हैं। [आपकी कृपा से] (नः) हमारा (अघं) पाप (अप शोषुचत्) सूखकर नष्ट हो जाये।

हे शुचि अग्निदेव! हे तेजस्विता के पवित्र पुंज परमप्रभु परमात्मन्! हम किसलिए आपका स्तुति-पूजन करते हैं, किसलिए भक्ति का नैवेद्य लेकर आपकी सेवा में उपस्थित होते हैं? कोई हल्का-फुल्का-सा उद्देश्य लेकर हम आपकी आराधना नहीं करते, किन्तु महान् लक्ष्य की प्राप्ति के लिए आपका यजन करते हैं। सर्वप्रथम हम 'उत्तम क्षेत्र' की इच्छा से आपकी पूजा करते हैं। क्षेत्र शरीर का नाम है, **क्योंकि मानव- शरीर सब शरीरों में उत्कृष्ट है, अतः आगामी जन्मों में भी मानव-शरीर पाने के लिए हम आपकी अर्चना करते हैं, जिससे हम अणिमा, लघिमा प्रभृति विविध सिद्धियों को तथा मुक्ति को अधिगत कर सकें।** क्षेत्र का दूसरा अर्थ कार्यक्षेत्र भी है।

हम इसलिए भी आपका आराधना करते हैं कि हमें कार्य करने के लिए जीवन में उत्तम कार्यक्षेत्र प्राप्त हो, क्योंकि जब तक कार्यक्षेत्र उत्तम नही मिलता, तब तक मनुष्य अपनी योग्यता का प्रदर्शन नही कर पाता और न ही सत्फल प्राप्त कर सकता है। अनेक महत्वाकांक्षी जन शक्ति रखते हुए भी केवल उत्तम कार्यक्षेत्र न मिलने के कारण ही जीवन में सफल नही माने जाते। दूसरी वस्तु, जो हम आपकी अर्चना करते हुए आपसे पाना चाहते हैं, वह है 'सुगातु' अर्थात् उत्तम मार्ग। हम उत्तम शरीर-रूपी क्षेत्र या उत्तम कर्मक्षेत्र को पा भी लें, किन्तु हमें चलने के लिए उत्तम मार्ग प्राप्त नहीं होता, तो हम पैर होते हुए भी पंगु हैं। अतः हम इस निमित्त से भी आपकी पूजा करते हैं कि हमारे मन में आप प्रेरणा करें कि हमें जीवन मे किस मार्ग से चलना चाहिए, जिससे हम निर्धारित लक्ष्य पर पहुंच सकें। तीसरी वस्तु है 'वसु' जिसे हम आपके अर्चन-पूजन द्वारा अधिगत करना चाहते हैं। वसु का अर्थ है निवासप्रद ऐश्वर्य, अर्थात् ऐसा ऐश्वर्य जिसे पाकर हम बसें, उजड़ें नहीं। वसु में आध्यात्मिक ऐश्वर्य और भौतिक ऐश्वर्य दोनो समाविष्ट हैं। हम अपने-अपने लक्ष्य के अनुसार अष्टांग योग के अभ्यास द्वारा उच्च से उच्च आध्यात्मिक ऐश्वर्य को अथवा सन्मार्ग से अर्जित उत्कृष्ट लौकिक धन-सम्पत्ति को प्राप्त करें।

हे देव! आपके सम्मुख झोली पसारते हुए हम अन्तिम याचना यह करते हैं कि आप हमारे समस्त पापों को भस्म कर हमें पावन बना दीजिये। हम आपको अपने हृदय-मन्दिर में आसीन कर आपकी आरती उतार रहे हैं, आपकी अर्चना कर रहे हैं।

आचार्य डॉ० रामनाथ वेदालंकार
की पुस्तक वेद-मंजरी से साभार प्रस्तुत

वैदिक–संस्कृति की प्राचीनता और महानता

–डॉ० कृष्णकान्त वैदिक शास्त्री

महर्षि दयानन्द सरस्वती का संस्कारविधि ग्रन्थ की रचना का उद्देश्य मानव के नव–निर्माण की योजना प्रस्तुत करना रहा है। कोई भी व्यक्ति जब बालक के रूप में जन्म लेता है तो वह दो प्रकार के संस्कार अपने साथ लाता है। कुछ संस्कार जन्म–जन्मान्तरों से उसके साथ चलते हैं और दूसरे प्रकार के संस्कार वह इस जन्म के माता–पिता से वंश परम्परा से प्राप्त करता है। अब हम विचार करते हैं कि एक छोटे से शिशु के जीवन में इन संस्कारों की प्रक्रिया के द्वारा उसके जन्म–जन्मान्तरों के संस्कार कैसे मिटाये जा सकते हैं?

हम देखते हैं कि जीवों के कारण–कार्य की शृंखला चलती रहती है। हमारे जीवन का नियंत्रण जन्म–जन्मान्तरों के संस्कारों से होता है और साथ ही माता–पिता के संस्कार भी मिल जाते हैं, जिनके आधार पर कर्मजन्य संस्कारों का भुगतान करना पड़ता है। कर्म किसी रजिस्टर में दर्ज नहीं किए जाते हैं, अपितु ये अपनी निशानी लगाते जाते हैं। ये रेखाएं मस्तिष्क पर पड़ती हैं। प्रसिद्ध मनावैज्ञानिक पर्सी नन ने इनके लिए **'नेमे'** शब्द का प्रयोग किया है, जिसका अर्थ है मस्तिष्क पर पड़ी रेखाओं की संचय की शक्ति। हमें यदि कुछ शब्द याद करने को कहा जाये, तो अगले दिन हम कुछ भूल जाते हैं परन्तु दोबारा याद करने पर पहले की अपेक्षा जल्दी याद कर लेते हैं। प्रत्येक अनुभव अपने पीछे मस्तिष्क में एक संस्कार छोड़ जाता है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि हमारे मन की संचय शक्ति ही **'नेमे'** है। इन संस्कारों का बन जाना ही कर्मों का लेखा है। इन कर्मों को एक–एक करके नहीं भोगना पड़ता है। अच्छे कर्मों से शुभ और बुरे कर्मों से अशुभ संस्कार बनते हैं। संस्कारों के बन जाने के बाद कर्म की अलग से सत्ता नहीं रहती है अपितु संस्कारों का बन जाना ही कर्मों का भुगतान है। जिन कर्मों का फल तत्काल

मिल गया, उनका कोई संस्कार शेष नहीं रहता है परन्तु जिन कर्मों का फल नहीं मिला, वे मस्तिष्क पर अपना संस्कार आलेखन के रूप में छोड़ जाते हैं। ये वैसे के वैसे ही बने रहते हैं।

अब हम यह विचार करते हैं कि संस्कार कहां रहते हैं? भौतिकवाद के अनुसार बाह्य–संवेदन या हमारे कर्मों का आलेखन मस्तिष्क पर पड़ता है, जिससे उसके ग्रे–मैटर में परिवर्तन होता रहता है। अब प्रश्न उठता है कि इस जन्म का अन्त हो जाने और पुनर्जन्म होने पर मस्तिष्क तो भस्म हो जाता है, ऐसी दशा में संस्कारों का निवास कहां रहता है? और हम जन्म–जन्मान्तरों तक उन्हें किस प्रकार ले जाते हैं? दर्शन शास्त्र में स्थूल शरीर के अन्दर एक सूक्ष्म शरीर का अस्तित्व माना गया है। आत्मा के अभौतिक होने के कारण उसका भौतिक स्थूल शरीर से कोई सीधा सम्बन्ध नहीं हो सकता है, इसलिए माध्यम के रूप में अभौतिक आत्मा और भौतिक–स्थूल शरीर के बीच में सूक्ष्म–शरीर कार्य करता है।

सूक्ष्म–शरीर की सत्ता का प्रमाण शास्त्रों में तो मिलता ही है परन्तु हमारे अनुभव में भी आता है। सोने के बाद हम स्वप्न में बिना स्थूल शरीर के सूक्ष्म शरीर की आँखों से देखते हैं, बिना स्थूल शरीर के हम सुनते हैं। यह बिना आँख के देखने

वाला और बिना कान के सूनने वाला सूक्ष्म–शरीर ही है। यह इतना सूक्ष्म है कि अभौतिक के समान है क्योंकि यह प्रकृति के सूक्ष्म तत्त्वों से बना है, यह भौतिक के समान भी है। अभौतिक होने के कारण इसका आत्मा से सीधा सम्बन्ध होता है। मस्तिष्क पर जो संस्कार भौतिक रूप से रेखायें या आलेखन करते हैं, ये संयुक्त होकर व्यक्ति का स्वभाव बनाते हैं। जब यह सूक्ष्म शरीर तक पहुंच जाता है, तब संस्कारों का क्षेत्र मस्तिष्क न रहकर सूक्ष्म–शरीर बन जाता है, जो भौतिक शरीर के मर जाने पर भी नहीं मरता है। वैदिक संस्कृति के अनुसार सूक्ष्म–शरीर या कारण–शरीर में जन्म धारण के बाद तो संस्कार पड़ते ही हैं अपितु जन्म से पहले भी जब शिशु माता के गर्भ में रहता है, तब भी उसमें नये संस्कार डाले जा सकते हैं। सूक्ष्म–शरीर में नये संस्कारों का पड़ जाना ही संस्कार पद्धति का रहस्य है।

ऊपर हमने संस्कारों के बनने और जन्म–जन्मान्तरों में साथ–साथ चलने पर विचार किया है। अब हम विचार करते हैं कि क्या नये संस्कारों द्वारा पुराने संस्कारों को बदला जा सकता है? नव–मानव का बीजारोपण माता–पिता के रज–वीर्य से होता है, जो सूक्ष्म–शरीर या कारण–शरीर का आधार बनता है। जब जन्म लेने के पूर्व शिशु के रूप में अपनी माता के गर्भ में आता है, उसको जन्म देने वाले स्त्री–पुरुष अपने विचारों के वेग, बल और उग्रता से नवीन संस्कार डालने का यत्न करते हैं। माता–पिता के विचार जैसे होंगे, उनके वैसे ही विचार तथा स्वभाव वाला सूक्ष्म शरीर बनेगा। वैदिक–संस्कृति के विचारकों का मानना है कि बीज के भीतर, उसकी रचना में ऐसा परिवर्तन किया जा सकता है कि उससे उत्कृष्ट पौधा उत्पन्न हो।

शिशु माता के गर्भ में नौ मास तक रहता है। उसके अंग से अंग, हृदय से हृदय और मस्तिष्क से मस्तिष्क बनता है। माता के माध्यम से ऐसा परिवर्तन किया जा सकता है, जिससे पुराने संस्कारों को बिलकुल बदला जा सकता है। उसे नये संस्कारों से प्रभावित किया जा सकता है। इस प्रकार संस्कारों से एक नई पीढ़ी का निर्माण किया जा सकता है। नव–मानव के निर्माण की दिशा में यह प्रथम चरण है जो वंश पर आधारित है।

दूसरा चरण पर्यावरण के आधार पर नव–मानव का निर्माण करना है। इसके लिए किसी शिशु को जन्म देने के बाद उसे ऐसे पर्यावरण से घेर देना है कि नये शिशु में नव–मानव का निर्माण हो सके। एक मनुष्य अपनी प्रवृत्ति से दूसरे की प्रवृत्ति, अपने संस्कारो से दूसरे के संस्कारों को बदल सकता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि संस्कारो से मनुष्य के जन्म–जन्मान्तरों के संचित संस्कारों को बदला जा सकता है। जो लोग पुनर्जन्म नहीं मानते, उनके लिए यह जीवन यात्रा इस जन्म में प्रारम्भ होकर इसी जन्म में समाप्त हो जाती है। उनके लिए पूर्वजन्म के संस्कारों का कोई महत्व नहीं रह जाता है। केवल माता–पिता से प्राप्त संस्कारों और सामाजिक परिवेश से मिलने वाले संस्कारों के द्वारा ही वे किसी भी मानव में संस्कारों का निर्माण होना मानते हैं।

वैदिक–संस्कृति की प्राचीनता और महानता से हम परिचित हैं परन्तु खेद के साथ यह भी स्वीकार करना पड़ता है कि यह समय की धूल और अनेक विकृतियों के कारण गिरावट की ओर अग्रसर थी। ऐसे समय में भारत भूमि में इसका पुनरोद्धार करने के लिए महर्षि दयानन्द सरस्वती का जन्म हुआ। उन्होंने वेद और वेदाधारित आर्ष ग्रन्थों का दोहन कर वैदिक–संस्कृति के पुनरोद्धार के लिए **संस्कार–विधि** नामक ग्रन्थ की रचना की जिसका मुख्य उद्देश्य नव–मानव की निर्माण की योजना प्रस्तुत करना था। इस पुस्तक में सोलह संस्कारों का विस्तार से वर्णन किया गया है।

हमारे देश में प्राचीन काल से ही संस्कारों की

परम्परा चली आ रही है, जिसका उल्लेख आश्वालायन और शांखायन आदि गृह्यसूत्रों में मिलता है। ये संस्कार दो प्रकार के हैं। प्रथम प्रकार के संस्कार माता के गर्भ में सन्तान के आने के पूर्व और गर्भ में आने पर किये जाते हैं, ये गर्भस्थ संस्कार कहे जाते हैं। गर्भाधान, पुसंवन और सीमन्तोन्नयन गर्भावस्था के संस्कार हैं। नामरण, उपनयन, ब्रह्मचर्य आदि जन्म लेने के बाद के संस्कार हैं।

संस्कारों में सबसे अधिक महत्वपूर्ण गर्भाधान संस्कार है। यह एक धार्मिक संस्कार है परन्तु आम धारणा के अनुसार, यह एक गुप्त व्यवहार है और संस्कार के रूप में करने पर यह एक घृणित कृत्य माना जाता है। संस्कार–विधि के गर्भाधान प्रकरण को गहराई से पढ़ा जाये तो इसमें कहीं नहीं लगता कि धार्मिक पवित्र कार्य के विषय से भिन्न कोई अश्लील ज्ञान दिया गया है परन्तु हजारों वर्षों से प्रचलन में न रहने के कारण अनेक प्रकार की भ्रांतियां उत्पन्न हो गई हैं। इसमें पति–पत्नी द्वारा एक पवित्र यज्ञ किये जाने का उल्लेख है। जिन ऋषियों ने इस संस्कार को किए जाने का विधान किया था, उनका लक्ष्य बहुत ऊंचा था। निरुक्त में सन्तानोत्पत्ति का आधारभूत विचार इस प्रकार हैः–

अग्डादग्डात्संभसि हृदयादधिजायसे
आत्मा वै पुत्र नामासि स जीव भारदः भातम् ।

अर्थात् सन्तान माता–पिता के अंग–अंग का निचोड़ होती है, एक तरह से उनकी आत्मा ही होती है। इसलिए सन्तानोत्पत्ति के समय अपना जो उत्कृष्टतम रूप हो, वही वर्तमान होना चाहिए। इतिहास में भी माता–पिता के संस्कारों और गुण–कर्मों के सन्तान में पाए जाने के अनेक उदाहरण मिलते हैं। महाभारत में अभिमन्यु के सुभद्रा के पेट में रहते हुए चक्रव्यूह के भेदन की कला सीखने की कथा कही गई है। जिन लोगों ने यह बात लिखी है, वे इस बात को मानते थे कि गर्भस्थ सन्तान पर माता के संस्कारों का चित्रण हो जाता है।

पुसंवन संस्कार में यजुर्वेद के मंत्रों का उच्चारण किया जाता है, जिनका भावार्थ गर्भस्थ शिशु के सम्बन्ध में यह है कि प्रत्येक गृहस्थ ऐसी सन्तान को जन्म दें, जो इस भूतल पर उत्पन्न होकर दिव्य जीवन की उड़ान भरे। सीमन्तोन्नयन संस्कार का उद्देश्य माता के मन को और उसके मस्तिष्क को ऐसे विचारों से भर देना है कि उसे सन्तान सौभाग्य और पति के सिवाय कुछ नहीं दिखता है, तभी वह श्रेष्ठ सन्तान को जन्म देती है। विश्व में अनेक प्रकार की संस्कृतियां हैं परन्तु केवल वैदिक संस्कृति के कर्णाधार महर्षियों ने ही मनुष्य के रूपान्तरण का स्वप्न देखते हुए संस्कार –पद्धति को जन्म दिया, जिसमें मानव के नव–निर्माण का रहस्य छिपा है।

अच्छे लोगों की संगति ऐसी है,
जैसे सुगंधित अगरबत्तियों की दुकान।
हम उस दुकान से कुछ खरीदें या न खरीदें,
सुगंध तो मिलेगी ही

क्या हम मनुष्य हैं ?

-मनमोहन कुमार आर्य

हम मनुष्य कहलाते हैं परन्तु क्या हम वास्तव में मनुष्य हैं? हम मनुष्य क्यों कहलाते हैं? इस प्रश्न का उत्तर है कि हमारे पास मन व बुद्धि है, जिससे हम विचार कर किसी वस्तु या पदार्थ आदि के सत्य व असत्य होने का निर्णय करते हैं। यदि मनुष्य किसी बात को मानता है, तो उसे अवश्य उसका विचार व मनन करना चाहिये कि क्या उसकी मान्यता सत्य है अथवा असत्य है? सत्य को स्वीकार करना चाहिये और असत्य का त्याग करना चाहिये। **यदि हम ऐसा करते हैं तो हम मनुष्य कहला सकते हैं, अन्यथा नहीं।**

हम स्वामी दयानन्द जी के व्यक्तित्व पर विचार कर सकते हैं। उनकी मान्यताओं एवं सिद्धान्तों का हमें ज्ञान है। उन्होंने अपनी सभी मान्यताओं व सिद्धान्तों को सत्य व असत्य की कसौटी पर कस कर देखा और सत्य को स्वीकार व असत्य का त्याग किया। जो बात सत्य की कसौटी पर खरी सिद्ध हुई, उसे उन्होंने स्वीकार किया। सत्य के विपरीत बात का उन्होंने त्याग किया। हमें भी ऐसा ही करना चाहिये, तभी हम मनुष्य कहलाने के अधिकारी होंगे।

ऋषि दयानन्द ने अपने लघु ग्रन्थ **'स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकाश'** में मनुष्य किसे कहना चाहिये, इस विषय में प्रकाश डाला है। वह लिखते हैं – ***'मनुष्य उसी को कहना (अर्थात् मनुष्य वही होता है) जो मननशील होकर स्वात्मवत् अन्यों के सुख–दुःख और हानि–लाभ को समझे। अन्यायकारी बलवान् से भी न डरे और धर्मात्मा निर्बल से भी डरता रहे। इतना ही नहीं किन्तु अपने सर्व सामर्थ्य से धर्मात्माओं की चाहे वे महा अनाथ, निर्बल और गुणरहित क्यों न हों, उन की रक्षा, उन्नति, प्रियाचरण और अधर्मी, चाहे चक्रवर्ती सनाथ, महाबलवान् और गुणवान् भी हों, तथापि उसका (व उनका) नाश, अवनति और अप्रियाचरण सदा किया करे अर्थात् जहां तक हो सके, अन्यायकारियों के बल की हानि और न्यायकारियों के बल की उन्नति सर्वथा किया करें। इस काम में चाहे उस (मनुष्य) को कितना ही दारुण दुःख प्राप्त हो, चाहे प्राण भी भले ही जावें परन्तु इस मनुष्यपनरूप धर्म से पृथक कभी न होवे।'***

इसके आगे भी ऋषि दयानन्द ने कुछ श्लोक देकर अपनी बात को बढ़ाया है। उनके द्वारा उद्धृत एक श्लोक में कहा गया है कि मनुष्य वह है कि जो किसी भी प्रकार की निन्दा व स्तुति अर्थात् प्रशंसा की परवाह नहीं करता। लक्ष्मी आये या जाये, इसकी भी चिन्ता नहीं करता। मृत्यु आज हो या युगों के बाद, इसकी भी उपेक्षा करता है। चाहे कुछ भी हो जाये, सच्चा या वास्तविक मनुष्य सत्य वा न्याय के पथ से कभी विचलित नहीं होता। एक अन्य श्लोक में कहा गया है कि सत्य से बढ़कर धर्म अर्थात् धारण करने योग्य गुण व आचरण नहीं है और असत्य से बढ़कर अधर्म, आचरण न करने योग्य कर्म, नहीं हैं। सत्य से बढ़कर ज्ञान नहीं है। ***उस सत्य का ही मनुष्य को सदैव आचरण करना चाहिये।***

ऋषि दयानन्द जी के उपर्युक्त वाक्यों से

मनुष्य के कर्तव्यों, धारण करने योग्य गुणों व धर्म पर प्रकाश पड़ता है। यह सभी बातें प्रायः निर्विवाद हैं। सबसे बड़ी गलती व भूल वहां होती हैं, जहां मनुष्य अपने अविद्याग्रस्त मतों व उनकी मान्यताओं के आचरण को ही धर्म मान लेते हैं और वैदिक ज्ञान व सत्य धर्म के ज्ञान व आचरण से दूर हो जाते हैं।

सृष्टि के आरम्भ में सृष्टिकर्ता ईश्वर ने मनुष्यों को सत्य व असत्य वा कर्तव्य–अकर्तव्य का बोध कराने के लिये वेदों का ज्ञान दिया था। सत्य कर्तव्यों का करना और असत्य कर्मों का न करना ही मनुष्य का धारण करने योग्य, धर्म, आचरण व कर्तव्य है। बिना वेदों के ज्ञान के मनुष्य को अपने धर्म व कर्तव्यों का ज्ञान नहीं होता। वेदों से ही ईश्वर व जीवात्मा का सत्यस्वरूप जाना जाता है। ईश्वर के सत्यस्वरूप को जानकर जो कि मनुष्यों को उसके किये हुए पाप व पुण्य कर्मों का फल दाता है, मनुष्य पाप व बुरे कर्मों से बचता है। वेदों वा वैदिक साहित्य का यदि हम अध्ययन नहीं करेंगे तो हम ईश्वर व जीवात्मा के गुण, कर्म, स्वभाव व स्वरूप को नहीं जान सकते। ईश्वर ने हमें मनुष्य जन्म देकर हम पर महान उपकार किया है। यह जीवन हम सबको वेदों का अध्ययन कर ईश्वर व जीवात्मा सहित सृष्टि को जानने तथा आसक्ति व कामना रहित सद्कर्मों को करके कर्मों में लिप्त न होते हुए ज्ञान व कर्म के बन्धनों से छूट कर मोक्ष प्राप्ति के लिये ईश्वर से मिला है। जो मनुष्य व विद्वान ऐसा करते हैं, वह प्रशंसा के पात्र हैं और जो नहीं करते, वह अपने बहुमूल्य जीवन को वृथा नष्ट कर रहे हैं।

यदि हम इतिहास ग्रन्थों बाल्मीकि रामायण और महाभारत सहित अपने दर्शनों व उपनिषद आदि ग्रन्थों का अध्ययन करें तो हम पाते हैं कि हमारे पूर्वज ऋषि, महर्षि,, योगी व विद्वान वेदों का स्वाध्याय, चिन्तन व मनन करने के साथ अग्निहोत्र एवं पंच महायज्ञों को किया करते थे। ऐसा करने से वह कर्म के बन्धनों से मुक्त होकर श्रेष्ठ गति अर्थात् मोक्षगामी होते थे। ***महाभारत के बाद भारत व विश्व के सभी लोग अविद्या से ग्रस्त हो गये।***

इस कारण वह भौतिक सुखों को ही महत्व देते हैं। वेद, उपनिषद, दर्शन आदि का ज्ञान उन्हें विस्मृत हो जाने के कारण वह अपनी अल्पज्ञ बुद्धि के कारण वेदों तक नहीं पहुंच सकें। आश्चर्य तो हमें भारत के उन विद्वानों वा पंडितों पर होता है जो भारत में वेद व वेदानुकूल वैदिक साहित्य के होते हुए भी अविद्या व वेद विरुद्ध मान्यताओं को मानते व उनका आचरण करते आ रहे हैं। यह ऐसा ही है कि जैसे कि एक प्यासा व्यक्ति कुएं व नदी के तट पर बैठा हुआ 'पानी पिलाओ' चिल्लाता रहे और नदी व कुएं से पानी लेकर पीने के लिये श्रम न करे। ऋषि दयानन्द का भारत व विश्व की मानव जाति पर महनीय उपकार है। उन्होंने वेदों का सत्य ज्ञान मानव मात्र तक पहुंचाने का भरसक प्रयत्न किया। उनकी कृपा से आज हमारे पास चारों वेदों के हिन्दी व अंग्रेजी आदि भाषाओं के भाष्य हैं। हम इनका अध्ययन कर सकते हैं और इनसे प्रेरणा लेकर सद्कर्म करते हुए स्वयं को सच्चा व श्रेष्ठ मनुष्य बना सकते हैं, जैसे कि मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम, योगेश्वर श्री कृष्ण, आचार्य चाणक्य, वेद–ऋषि दयानन्द, गुरुकुलीय परम्परा के उद्धारक स्वामी श्रद्धानन्द आदि महापुरुष थे।

वेदों की शिक्षायें सार्वभौमिक एवं जन–जन के लिये हैं। वेदों का अध्येता व उसका आचरण करने वाला मनुष्य ही यथार्थ अर्थों में मनुष्य होता है तथा वेदों के विरुद्ध आचरण करने वाला नास्तिक व साधारण अथवा निम्न कोटि का मनुष्य होता है। मनुष्य बनकर भी जो ईश्वर व जीवात्मा आदि के यथार्थ स्वरूप व इनके गुण, कर्म व स्वभाव को जानने का प्रयत्न नहीं करता अथवा जान लेने के बाद भी ईश्वर की उपासना व अग्निहोत्र यज्ञ आदि

नहीं करता, उसे हम सच्चा व पूर्ण मनुष्य नहीं कह सकते। इन कृत्यों को न करने से वह ईश्वर, समाज व देश का ऋणी रहता है और अपने ऋण को परजन्मों में अनेक योनियों में जन्म लेकर चुकाता है। अतः सभी मनुष्यों को वेद, दर्शन, उपनिषद, मनुस्मृति, सत्यार्थप्रकाश आदि ग्रन्थों का अध्ययन कर अपने कर्तव्यों का पालन करना चाहिये, जिससे उनका सांसारिक जीवन एवं परजन्म सुखों से युक्त हो सकें।

मनुष्य जीवन स्वार्थसिद्धि के लिये नहीं अपितु ज्ञान प्राप्त कर, उस ज्ञान को जन–जन तक पहुंचाने के लिये मिला है। मनुष्य को बन्धनों से बचने के लिये सादा–सरल व उच्च विचारों का जीवन ही व्यतीत करना चाहिये। जो मनुष्य जितनी अधिक मात्रा में इन्द्रिय सुखों का भोग करता है, वह उतना ही अधिक बन्धनों व दुःखों से ग्रस्त होता है। अतः वेदाज्ञा ***'तेन त्यक्तेन भुंजीथा'*** के अनुसार मनुष्य को सुख के पदार्थ भोगों का भोग त्यागपूर्वक अर्थात् न्यूनतम आवश्यकता के अनुसार करना चाहिये। मनुष्य को अधिक धन संग्रह नहीं करना चाहिये। यदि ईश्वर की कृपा से सत्कार्यों व पुरुषार्थ आदि से धन संग्रहित होता है, तो उसे सुपात्रों में दान करना चाहिये। ऐसा करके वह श्रेष्ठ मनुष्य बनेगा और इससे उसका आत्मा देश, समाज व मनुष्य आदि प्राणियों का अल्पमात्रा में ऋणी होगा।

मनुष्य का जीवन परोपकारमय होना चाहिये। परोपकार से ही मनुष्य आध्यात्मिक पूंजी एकत्र कर परजन्मों में सुखी व उत्तम गति को प्राप्त होते हैं। ऐसे मनुष्य ही मनुष्य कहलाने के अधिकारी होते हैं। स्वाध्याय से सभी मनुष्यों को अपना ज्ञान बढ़ाना चाहिये और उसके अनुसार कर्म करते हुए श्रेष्ठ कर्मों की पूंजी अर्जित करनी चाहिये। हम वैदिक ज्ञान को प्राप्त कर तथा उत्तम कर्मों को करके ही सच्चे मनुष्य बन सकते हैं और सच्चे मनुष्य ही ईश्वर को प्राप्त होकर बन्धन व दुःखों से मुक्त होते हैं। वेद की आज्ञा का पालन करते हुए हम मनुष्य बनें और इसके साथ अपने ईष्ट, मित्र, बन्धुओं व परिवारजनों को भी मननशील बनाकर व उन्हें निर्बलों की अन्यायकारियों आदि से रक्षा करने की प्रेरणा करके अपने जीवन को सफल करें।

आवश्यक सूचना

प्रिय पाठकगण! पिछले कई महीनों से ग्राहकों की शिकायत आ रही है कि उन्हें पवमान पत्रिका नहीं मिल रही है या समय पर नहीं पहुँच रही है। इस सम्बन्ध में आपको सूचित किया जाता है कि आश्रम के द्वारा पत्रिका के सभी ग्राहकों के साथ-साथ वे ग्राहक जिनका शुल्क समाप्त हो गया है, को भी लगातार पत्रिका भेजी जा रही है। आपसे अनुरोध है कि कृपया एक बार अपने नजदीकी पोस्ट ऑफिस को इस सम्बन्ध में जरुर सूचना दें। हम अपने स्तर पर भी डाक विभाग से समस्या के समाधान हेतु प्रयास कर रहे हैं। जिन सदस्यों का सदस्यता शुल्क समाप्त हो गया है, उनकी लिस्ट आगामी माह में क्रमशः पत्रिका में प्रकाशित कर दी जायेगी। आप आश्रम के टेलीफोन नम्बर पर भी अपने शुल्क की स्थिति मालूम करके आवश्यक धनराशि आश्रम के कैनरा बैंक के ''पवमान'' खाता, खाता संख्या-2162101021169, IFSC Code- CNRB0002162, में जमा करने का कष्ट करें। कृपया पत्रिका शुल्क जमा करने के पश्चात् आश्रम कार्यालय के टेलीफोन नं0-0135-2787001, अथवा मोबाईल नम्बर-7895978734, पर व्हाट्स-अप के माध्यम से अवश्य सूचित करने का कष्ट करें ताकि आपको रसीद भेजी जा सके। जिन पाठकों को पत्रिका रजिस्टर्ड पोस्ट से मंगानी है, उन्हें प्रतिवर्ष रू. 400/- डाक खर्च के देने होंगे। इस प्रकार आपको एक वर्ष में पत्रिका का मूल्य रू. 600/- का भुगतान करना होगा। यदि किसी कारण किसी माह आपको ''पवमान'' पत्रिका प्राप्त न हो तो आश्रम कार्यालय को सूचित कर दें। आपको पत्रिका पुनः भेज दी जायेगी। पत्रिका हमारी वेबसाईट www.vaidicsadhanashramdehradun.com *पर भी उपलब्ध है।धन्यवाद*

अद्वितीय दानी, सेवा भावी एवं संस्था शिल्पी बावा गुरमुख सिंह

-मनमोहन कुमार आर्य

देहरादून का प्रसिद्ध वैदिक साधन आश्रम तपोवन, नालापानी रोड, देहरादून जब तक रहेगा, इसके संस्थापक बावा गुरमुख सिंह जी और उनके प्रेरक महात्मा आनन्द स्वामी जी के नाम को अमर रखेगा। बावा गुरमुख सिंह जी का जन्म अमृतसर में एक सिख परिवार में पिता प्रद्युम्न सिंह जी के यहां हुआ था। आपके जन्म का गांव अमृतसर से लगभग 50 किमी. दूरी पर **'गोइन्दवाल'** है। पिता एवं परिवारजनों ने आपका नाम **'गुरमुख सिंह'** रखा। बावा जी के परिवार का सम्बन्ध पंजाब के सिख गुरुओं की तीसरी पीढ़ी के गुरु श्री अमरदास जी से है, जिन्होंने अपने तप, त्याग, सेवा से उच्च आदर्श उपस्थित किये हैं।

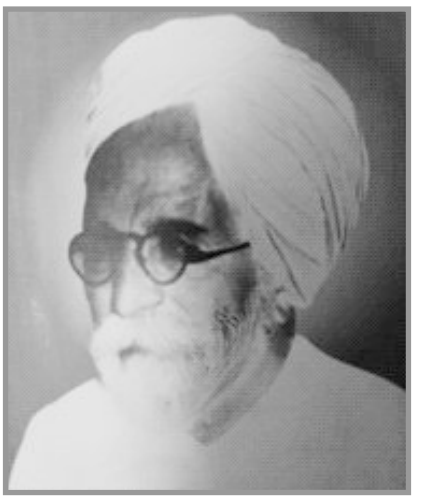

आपने आरम्भिक शिक्षा अपने कस्बे के निकट प्राप्त की और उसके बाद आप क्वेटा (पाकिस्तान) में अपने पिताजी के कपड़े के व्यापार की देखरेख का काम करने लगे। आपके पिता का कपड़ा बनाने का कारखाना था। आपके इस उद्योग में **'जहाज मार्का क्रेप–खद्दर'** बनता था। कपड़े का यह ब्रांड देश–विदेश में प्रसिद्ध एवं लोकप्रिय था और इसकी बहुत बिक्री हुआ करती थी। देश के सभी भागों के अतिरिक्त आपका बनाया हुआ वस्त्र इराक, मलेशिया, सिंगापुर, ईरान व अफ्रीका आदि देशों को भी भेजा जाता था।

आपने अपने पूज्य पिता श्री प्रद्युम्नसिंह जी की स्मृति में सन् 1938 में पांच लाख रुपये देकर एक ट्रस्ट की स्थापना की थी। इस ट्रस्ट से 60 से अधिक शिक्षण संस्थायें तथा कई अस्पताल चलते थे, जो वर्तमान के राज्यों पंजाब, हिमाचल और हरियाणा आदि में स्थित थे। आपके द्वारा मुम्बई तक में शिक्षा संस्थायें स्थापित की गई थीं। आपके इस ट्रस्ट के माध्यम से हजारों अनाथों, विधवाओं तथा निर्धनों की आर्थिक सहायता भी की जाती थी जिससे ट्रस्ट साधारण लोगों में प्रसिद्धि को प्राप्त हो गया था।

बावा गुरमुख सिंह जी यद्यपि सिख परिवार में जन्में थे परन्तु आप ऋषि दयानन्द की विचारधारा और आर्यसमाज के दीवाने थे। आपने अनेक आर्यसमाजों के भवन निर्माण के लिये दिल खोल कर आर्थिक अनुदान दिया। आपने अमृतसर के लोहगढ़ आर्यसमाज के निर्माण में भी सर्वाधिक आर्थिक सहायता दी थी। जब इस समाज के निर्माण का प्रस्ताव हुआ, तो आपने घोषणा की कि सभी लोग मिलकर जितना धन संग्रह करेंगे, उतना धन मैं अकेले अपनी ओर से आर्यसमाज का भवन निर्माण करने के लिए दूंगा।

भवन बनना आरम्भ हुआ तो आपने और अधिक उदारता का परिचय देते हुए आपको जितना धन देना था, उसका भी दुगुना धन देकर सबको आश्चार्यान्वित कर दिया। आपने इस भवन के विषय में कई स्वप्न संजोए थे। एक था कि आर्यसमाज मन्दिर भव्य बनना चाहिये।

इतना बड़ा उद्योग सम्भालते हुए भी अमृतसर

आर्य समाज के भवन को आपने स्वयं वहां खड़े होकर पूरी श्रद्धा व समर्पण भावना से बनवाया। भवन निर्माण का सभी काम आपकी देखरेख में होता था। बावा गुरमुख सिंह की उदारता का एक उदाहरण यह भी है कि बावाजी ने महात्मा आनन्द स्वामी जी को उन दिनों एक लाख रुपया वेद प्रचार कार्यों के लिये दिया था।

बावा जी उदार हृदय के महामना थे। उनका दूसरा गुण था कि पद व प्रतिष्ठा से दूरी व वैराग्य। आप आर्यसमाज के एक जुझारु नेता भी थे। आप जीवनभर पद व प्रतिष्ठा से दूर रहे। आप स्वामी श्रद्धानन्द जी और उससे पूर्व पं. लेखराम जी के द्वारा विधर्मियों व स्वजनों की शुद्धि के आत्मना समर्थक थे। बताते हैं कि जब आर्यसमाज शुद्धि तथा दलितोद्धार आदि समाज सुधार के कार्य आरम्भ करता था तो आप दिल खोल कर आर्थिक सहायता देते थे। स्वदेशी चिकित्सा पद्धति आयुर्वेद में भी आपकी गहरी रुचि थी। आपने आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति पर अनुसंधान व गवेषणा के केंद्रों को सहायता देने के साथ आयुर्वेदिक चिकित्सालयों की स्थापनाओं में भी सहयोग दिया था।

यज्ञ अग्निहोत्र आर्यसमाज की संसार को अनुपम देन है, जो वायु से दुर्गन्ध व प्रदूषण को दूर करने के साथ मनुष्यों को आध्यात्मिक एवं कायिक लाभ पहुंचाता है। यज्ञ करना मनुष्य का अनिवार्य कर्तव्य है। जो नहीं करता वह पाप करता है व दुःख पाता है। ऋषि दयानन्द ने लिखा है कि मनुष्य के शरीर के निमित्त से जितना दुर्गन्ध वायु, जल व भूमि आदि में विकार उत्पन्न करता है, उतना व उससे अधिक वायु आदि की शुद्धि प्रत्येक गृहस्थ मनुष्य को अग्निहोत्र यज्ञ करके करनी चाहिये। बावा गुरमुख सिंह जी की यज्ञ–अग्निहोत्र में गहरी रुचि थी। वह यज्ञ करके मानसिक शान्ति व तृप्ति का अनुभव करते थे।

एक बार की बात है कि प्रान्त में सूखा पड़ा। वर्षा न होने के कारण किसानों की फसल नष्ट हो गई। किसान और अन्य लोग वर्षा के लिये आकाश की ओर देखते और ईश्वर से प्रार्थना करते कि शीघ्र वर्षा हो। ऐसे समय में बावा जी ने वृष्टि यज्ञ का आयोजन कराया। यज्ञ के प्रभाव से वायुमण्डल में परिवर्तन हुआ। बादल आये और यज्ञ की पूर्णाहुति से पहले ही तेज वर्षा हो गई। इस घटना से बावा जी की यज्ञ में श्रद्धा व विश्वास का अनुमान लगाया जा सकता है। बावा जी का जीवन ही यज्ञमय था। वह वैदिक धर्म के अग्रणीय नेता व प्रेरक जीवन के धनी थे।

बावा जी मानवता के सच्चे पुजारी थे। आप एक बार कश्मीर गये। वहां आपने गरीबी देखी तो आपका साधु हृदय दया व प्रेम से भर गया। आपने वहां के किसानों व गरीबों को रुपया बांटा। उनकी भावना थी कि कोई मनुष्य भूखा न रहे, सबके घर में पेट भरने के लिए भोजन व अन्न हो। बावा जी व्यापार–मण्डल के सक्रिय सदस्य भी थे। सन् 1942 में इस संगठन ने सरकारी बिक्री कर अधिनियम के विरुद्ध लम्बी हड़ताल की। समस्त पंजाब में हड़ताल की गई। वर्तमान का पाकिस्तान भी तब पंजाब का हिस्सा था। हड़ताल यदि लम्बी चले तो उसमें छोटे व्यापारी टिक नहीं पाते। बावा जी ने इनकी पीड़ा दूर करने के लिये लंगर चलाये। सब जरुरतमंदों तक भोजन पहुंचाने का प्रयास किया। व्यापारियों को आवश्यकता की सामग्री सहित नगद धन भी दिया। आन्दोलन चालीस दिन चला। बावा जी भी इस अवधि में लोगों तक अन्न, धन व आवश्यकता की सामग्री वितरित करते–कराते रहे।

अखिल भारतीय हिन्दू महासभा का सन् 1945 में एक अधिवेशन अमृतसर में सम्पन्न हुआ। इसकी प्रेरणा आप ने ही की थी। इस सम्मेलन में हिन्दू महासभा के वरिष्ठ नेता डॉ. गोकुल चन्द नारंग, डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी आदि अमृतसर पधारे थे। इन सभी नेताओं का आतिथ्य बावा गुरमुख सिंह जी ने अपने भव्य एवं विशाल निवास

पर ही किया था।

बंगाल में सन् 1945 में भयंकर दुर्भिक्ष पड़ा। वहां के लाखों लोग अन्न के दाने–दाने को तरस गये। हजारों निर्धन आबाल–वृद्ध जन अन्न मिलने की आशा में मर गये। हमने आर्यनेता, सार्वदेशिक सभा के मंत्री और प्रसिद्ध सासंद श्री ओमप्रकाश पुरुषार्थी से सुना था कि वह भी बंगाल दुर्भिक्ष पीड़ितों की सहायता करने गये थे। एक माता की सुनसान झोपड़ी में पहुंचने पर उसने रो–रो कर अपनी आप–बीती कथा सुनाई थी। उसने उन्हें बताया था कि कई दिनों तक वह भूखी रही। उससे अपनी भूख पर नियंत्रण नहीं हो रहा था। उनके पास एक छोटा बच्चा था। भूख की असहनीय पीड़ा से त्रस्त उस माता ने उस बच्चे को मारकर खा लिया।

यह घटना सुनाकर श्री पुरुषार्थी जी ने कहा था कि उस माता से पूछने पर उसने स्वयं स्वीकार किया था कि मांसाहारी संस्कार होने के कारण उससे यह कृत्य हुआ। यदि उसमें मांसाहार के संस्कार न होते तो वह यह दुष्कृत्य न करती। भूख के अनेक कुपरिणामों में एक परिणाम यह भी हो सकता है। ऐसे दुर्भिक्ष में वहां पीड़ितों की सहायता के लिये अनाज भेजने के लिए बावा जी को अंग्रेज सरकार से बुरी तरह से जूझना पड़ा। सरकार रेल के खाली वैगन देने में ना–नुकर कर रही थी। बावा जी ने इस पर सरकार को कहा कि आप मुझे बंगाल में अन्न भेजने की अनुमति दे दो, मैं स्वयं सड़क मार्ग से ट्रकों से वहां अन्न पहुंचा दूंगा। बावा जी द्वारा वहां अन्न भेजा गया, जिसका वितरण आर्यसमाज के आर्यवीर स्वयंसेवकों व अन्यों ने किया।

बावा जी ने जो अन्न भिजवाया, वह चार लाख रुपयों से अधिक धनराशि का था। अनुमान कीजिये कि यह धनराशि आज की चार लाख नहीं अपितु उन दिनों की थी, जब एक रुपये का 12 सेर गेहूं और 6 सेर बासमती चावल आता था। इसका अर्थ हुआ कि इस धनराशि से 48 लाख सेर गेहूं लिया जा सकता था। किलो में यह 45 लाख किलो अर्थात् 4,500 टन होता है। आज यह धनराशि लगभग साढ़े पांच करोड़ रुपये से अधिक होती है। बावा जी का यह काम किसी महायज्ञ से कम नहीं था। यह तो हमें हजारों महायज्ञों के समान प्रतीत होता है।

सन् 1947 में देश का विभाजन हुआ। पाकिस्तान से लाखों की संख्या में हिन्दू शरणार्थी अपनी समस्त भौतिक सम्पत्ति वहां छोड़कर, विधर्मियों से लुट–पिट कर और अपने प्रियजनों की जानें गवांकर भारत आये। बावा जी ने इस अवसर पर भी अपने विशाल हृदय का परिचय देते हुए उनके लिये लंगर चलाए, उन्हें वस्त्र दिए, उनके निवास की व्यवस्था की और उनके लिए शिविरों का प्रबन्ध किया। बावा जी ने भारतीय सैनिकों और पुलिस बलों को भी पूरी सहायता दी, जिससे हिन्दू शरणार्थी भारत में कुशलतापूर्वक पहुंच सकें। भारत और पाकिस्तान के प्रधानमंत्रियों पं. जवाहरलाल नेहरु और मियां लियाकत अली के बीच शरणार्थियों की समस्या हल करने के लिये जो बैठक हुई थी, वह बावा गुरुमुख सिंह जी के निवास स्थान पर ही हुई थी। सरदार पटेल आदि वरिष्ठ नेता भी शरणार्थियों की वास्तविक स्थिति जानने के लिये बावा जी को ही प्रतिदिन फोन करते थे।

बावा जी शिक्षा जगत से भी जुड़े रहे। आप दयानन्द ऐंग्लो वैदिक प्रबन्धक ट्रस्ट के आजीवन सदस्य रहे। बहुत से स्कूल व कालेज आपकी सीधी देख–रेख में चलते थे। आपने शिक्षा के प्रचार व प्रसार में लाखों रुपया व्यय किया था। बावा जी को अपने इन समाज सेवा के कार्यों में अपने छोटे भ्राता श्री बावा महाराज सिंह जी का भी पूर्ण सहयोग मिला अन्यथा यह सेवाकार्य सम्भव नहीं था। आपके परिवार में बलिदान व सेवा की परम्परा रही है, जिसका संकेत पूर्व किया गया है। आपने

मर्यादा पुरुषोत्तम राम के अनुज लक्ष्मण की तरह अपने बड़े भ्राता जी का साथ दिया। जब कभी कोई सज्जन बावा महाराज सिंह जी से संस्थाओं के सहयोग की बात करते थे, तो आप कहते थे कि 'मैं तो भरत की तरह भाई की खड़ाऊवें लेकर गद्दी पर बैठा हूँ। यह गद्दी तो मेरे बड़े भाई साहब की है। मैं तो बस सेवक हूँ और सेवा करता हूँ।'

आप अनुमान कर सकते हैं कि बावा महाराज सिंह जी का जीवन भी भरत की तरह कितना त्याग–तपस्या से युक्त व सेवाभावी रहा होगा? बावा गुरमुख सिंह जी ने जो महान कार्य किये, उसमें उनके अनुज व पूरे परिवार का सहयोग प्राप्त था। उनके माता–पिता धन्य हैं, जिन्होंने अपनी सन्तानों व परिवार को ऐसे श्रेष्ठ व ऊंचे संस्कार दिये थे।

ऐसी महान स्मरणीय एवं अनुकरणीय आत्मा बावा गुरमुख सिंह जी द्वारा महात्मा आनन्द स्वामी जी की प्रेरणा पर वर्तमान में करोड़ों रुपये की लगभग 600 बीघा भूमि खरीद कर 'वैदिक साधन आश्रम तपोवन, देहरादून' की स्थापना की गई थी और उसके बाद भी उनका सहयोग जारी था। बताते हैं कि बाद में जमींदारी उन्मूलन प्रथा में सरकार ने लगभग 500 बीघा भूमि अधिकृत कर ली। अब लगभग 200 बीघा भूमि से कम भूमि ही आश्रम के पास है। हम श्रद्धेय बावा जी को अपने श्रद्धा–सुमन अर्पित करते हैं और आश्रम की संवृद्धि और सफलता की कामना करते हैं। हमने इस लेख में आश्रम के पूर्व प्रधान श्री यशपाल आर्य जी की सामग्री का उपयोग किया है। हम उनका हृदय से आभार एवं धन्यवाद करते हैं।

सर्व श्री दीप चन्द विजय कुमार,

कीरतपुर, जिला बिजनौर (उ.प्र.), मो. 9837444469

दीप कोल्ड स्टोर,

कीरतपुर, जिला बिजनौर (उ.प्र.), मो. 9457438575

दीप मार्बल्स,

कीरतपुर, जिला बिजनौर (उ.प्र.), मो. 9412468691

आर्यसमाज राजपुर, देहरादून का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

ईश्वर की उपासना का फल मनुष्य को जीवन में शीघ्र मिलता हैः डॉ. विष्णुमित्र वेदार्थी

-मनमोहन कुमार आर्य

आर्यसमाज राजपुर, देहरादून का तीन दिवसीय वार्षिकोत्सव दिनांक 25 नवम्बर से 27 नवम्बर 2022 तक हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। उत्सव के तीनों दिन यज्ञ, भजन एवं प्रवचनों का आयोजन हुआ। यज्ञ द्रोणस्थली कन्या गुरुकुल देहरादून की आचार्या एवं ब्रह्मचारिणियों द्वारा सम्पन्न कराया गया।

मधुर एवं प्रेरक भजन श्री प्रदीप आर्य, फरीदाबाद जी द्वारा हुए तथा प्रवचनों के लिए आर्यजगत के प्रसिद्ध विद्वान आचार्य डॉ. विष्णुमित्र वेदार्थी पधारे थे। रविवार का समापन समारोह आर्यसमाज मन्दिर के बाहर पण्डाल लगाकर अत्यन्त भव्य रूप में सम्पन्न किया गया। आर्यजगत के शीर्ष विद्वान आचार्य डॉ. विष्णुमित्र वेदार्थी जी ने समापन समारोह में अपने सम्बोधन में एक माताजी के कुछ प्रश्नों का समाधान किया। पहला प्रश्न मांसाहार पर था। इस प्रश्न का समाधान विद्वान आचार्य जी ने किया।

प्रश्न था कि परमात्मा ने हिंसा करने वाले प्राणियों को पैदा ही क्यों किया? आचार्य जी ने इस प्रश्न के समाधान में पूर्वजन्मों के कर्मसमुच्चय 'प्रारब्ध' की चर्चा की और बताया कि इस शब्द का अर्थ होता है जो शुरू हो चुका हो। आचार्य जी ने प्रारब्ध कर्मों पर प्रकाश डाला। आचार्य जी ने कहा कि प्रारब्ध के तीन रूप हैं। तीन रूपों में कर्म फल मिलता है। ये हैं 1– जाति, 2– आयु और 3– भोग। आचार्य जी ने बताया कि जाति कर्मों के आधार पर मिलती है। मनुष्य जाति, पशु जाति, पक्षी जाति आदि जातियां कहलाती हैं। आयु, मनुष्यों के पृथक–पृथक जीवन काल को कहते हैं। आचार्य जी ने बताया कि भोग मनुष्यों को कर्मों के अनुरूप प्राप्त होने वाले सुख व दुःख को कहते हैं।

उन्होंने कहा कि कर्म मनुष्य द्वारा किया जाता है परन्तु उन कर्मों के फलों की व्यवस्था परमात्मा की होती है। आचार्य डॉ. विष्णुमित्र वेदार्थी जी ने कहा कि उपासना का फल मनुष्यों को इसी जीवन में अति शीघ्र मिलता है। अपने सम्बोधन में आचार्य जी ने आधिदैविक, आधिभौतिक तथा आध्यात्मिक सुख व दुःखों को चर्चा भी की। उन्होंने कहा कि हम जो करते हैं, उसी के अनुरूप सुख व दुःखों को भोगते हैं। माता व पिता से हमें जो सुख व दुःख मिलते हैं, वह भी हमारे कर्मों का परिणाम होते हैं। परमात्मा पाप कर्म करने वाले मनुष्यों को निम्न प्राणी योनियों में भेजकर उनका सुधार करते हैं। आचार्य जी ने यह

भी बताया कि जो तपस्वी नहीं होते, उन्हें योग सिद्ध नहीं होता।

उन्होंने कहा कि ऋषि उत्कृष्ट विद्वान को कहते हैं। आचार्य जी ने ऋषि शब्द के अनेक अर्थों एवं उनकी योग्यताओं पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि ऋषियों को भूत, वर्तमान सहित भविष्य में होने वाली घटनायें दिखाई देती हैं। आचार्य जी ने श्रोताओं को बताया कि परमात्मा प्रदत्त विस्मृति का आवरण कल्याणप्रद है। आचार्य जी ने वृक्षों में जीवों के होने और उन वनस्पतियों के भक्षण से होने वाले आभाषित पाप संबंधी शंका का समाधान भी किया। उन्होंने कहा कि सुषुप्ति एवं समाधि अवस्थाओं में हम स्वप्न नहीं लेते। इसी प्रकार वृक्ष एवं वनस्पतियां भी सुषुप्ति अवस्था में रहती हैं। इसके अतिरिक्त ईश्वर ने हमें फल एवं वनस्पतियों के भोग करने की आज्ञा वेद में दी है इसलिए वनस्पतियों में जीव होने पर भी उनका भक्षण करने में पाप नहीं लगता। आचार्य जी ने महिला श्रोता के सभी प्रश्नों का विस्तृत उत्तर देने के बाद पूछा कि क्या उनका समाधान हुआ है या नहीं? श्रोता ने कहा कि उनका समाधान हो गया है और वह सन्तुष्ट है।

आयोजन में श्री सत्यपाल आर्य जी उप–प्रधान आर्यसमाज, राजपुर ने भी एक भजन सुनाया। आचार्या डा. अन्नपूर्णा जी सहित पं. उम्मेद सिंह विशारद जी, ऋषिभक्त श्री गोविन्द सिंह भण्डारी जी, श्री विजयपाल आर्य जी, श्री मानपाल सिंह आर्य के सम्बोधन भी हुए। मंत्री श्री ओम्प्रकाश महेन्द्रू जी ने वार्षिक रिर्पोट पढ़कर सुनाई। समाज के अधिकारियों एवं सदस्य को इस सफल आयोजन के लिए बधाई। आयोजन में बड़ी संख्या में स्त्री व पुरुष उपस्थित थे।

क्रान्तिकारियों का स्मरण

– महेन्द्र जी बीकानेर

भगत सिंह की बैरक की साफ-सफाई करने वाले भंगी का नाम बोघा था। भगत सिंह उसको बेबे (मां) कहकर बुलाते थे। जब कोई पूछता कि भगत सिंह ये भंगी बोघा तेरी बेबे कैसे हुआ? तब भगत सिंह कहता, मेरा मल-मूत्र या तो मेरी बेबे ने उठाया, या इस भले पुरूष बोघे ने। बोघे में मैं अपनी बेबे (मां) देखता हूं। ये मेरी बेबे ही है। यह कहकर भगत सिंह बोघे को अपनी बाहों में भर लेता।

भगत सिंह जी अक्सर बोघा से कहते, बेबे मैं तेरे हाथों की रोटी खाना चाहता हूँ। पर बोघा अपनी जाति को याद करके झिझक जाता और कहता, भगत सिंह तू ऊँची जात का सरदार, और मैं एक अदना सा भंगी, भगतां तू रहने दे, जिद न कर। सरदार भगत सिंह भी अपनी जिद के पक्के थे, फांसी से कुछ दिन पहले जिद करके उन्होंने बोघे को कहा बेबे अब तो हम चंद दिन के मेहमान हैं, अब तो इच्छा पूरी कर दे! बोघे की आँखों में आंसू बह चले। रोते-रोते उसने खुद अपने हाथों से उस वीर शहीद ए आजम के लिए रोटिया बनाई, और अपने हाथों से ही खिलाई। भगत सिह के मुंह में रोटी का गास डालते ही बोघे की रुलाई फूट पड़ी। ओए भगतां, ओए मेरे शेरा, धन्य है तेरी मां, जिसने तुझे जन्म दिया। भगत सिंह ने बोघे को अपनी बाहों में भर लिया।

ऐसी सोच के मालिक थे अपने वीर सरदार भगत सिंह जी...। परन्तु आजादी के 70 साल बाद भी हम समाज में व्याप्त ऊँच-नीच के भेद-भाव की भावना को दूर करने के लिये वो न कर पाए जो 88 साल पहले भगत सिंह ने किया। महान शहीदे आजम को इस देश का सलाम।

सर्दियों के रोग

-डॉ. भगवान दास

1. गला बैठना: जब श्वरयन्त्र और ग्रसनी के साथ–साथ गले में भी सूजन आ जाती है, तो इससे आवाज भारी हो जाती है। इसे हम साधरण भाषा में गला बैठना कहते हैं। ऐसा होने पर रोगी आसानी से बातचीत नहीं कर पाता या बोलते समय उसे गले में दर्द महसूस होती है। इस रोग में रोगी को ज्वर और खांसी भी हो सकते हैं। ज्यादातर जीभ गंदी–सी (सफेद जैसे पदार्थ से ढकी हुई) रहती है। जब रोगी को कब्ज होती है, तो यह रोग बढ़ जाता है। आयुर्वेद में यह रोग स्वरभेद कहलाता है।

उपचार: गला बैठने पर रोगी को यष्टीमधु (मुलहठी) और वच का चूर्ण एक–एक चम्मच की मात्रा में, दिन में चार बार शहद मिलाकर देना चाहिए। गले पर बाहर से सूखी और गर्म सिकाई करने से बहुत लाभ मिलता है। एक प्याला गुनगुने जल में एक छोटा चम्मच इरिमेदादि तैल डालकर यदि गरारे कराए जायें, तो इससे बहुत जल्दी आराम पहुंचता है। खदिरादि वटी या एलादि वटी की गोलियां मुंह में रखकर धीरे–धीरे चूसनी चाहिए। यदि रोगी कब्ज से पीड़ित है, तो उसे रात को सोते समय एक चम्मच हरड़ का चूर्ण गर्म जल के साथ देना चाहिए।

आहार: अदरक, काली मिर्च, नमक, लहसुन, किशमिश, मुनक्का तथा घी इस रोग के लिए उपयोगी पदार्थ माने जाते हैं। अतः रोगी को इनका सेवन अधिक मात्रा में करना चाहिए। इसके विपरीत रोगी को दही, अन्य खट्टे पदार्थों, तले हुए खाद्य–पदार्थों और बहुत ठण्डी वस्तुओं के सेवन से परहेज रखना चाहिए।

अन्य आचार–व्यवहार: रोगी को चाहिए कि वह अपने गले को ठण्डी हवा और ठण्डे पानी से बचाकर रखे। कुछ दिनों तक उसे सिर का स्नान भी नहीं करना चाहिए।

2. **छीकें आना** (Sneezing): छींकना एकदम अचानक होनेवाली और बिना इच्छा (अनैच्छिक) के तीव्र रूप से सम्पन्न होने वाली शारीरिक क्रिया है। यह एक प्रकार से श्वास के बाहर निकलने की प्रक्रिया है, जिसके बाद अन्तःश्वसन (सांस अंदर लेना) की क्रिया होती है। छींक के दौरान ज्यादातर मुंह खुला रहता है, जिससे ताजी हवा नाक के माध्यम से अंदर चली जाती है। आमतौर पर नाक की श्लेष्मल झिल्ली अथवा सिर के सायनोसिस में संक्षोभ होने पर छींक आती है। छींक द्वारा सायनोसिस के अंदर जमा रहनेवाला कफ साफ हो जाता है। साधारणतः दिन में एक या दो बार छींक आती है। परंतु जब सर्दी और बर्फीला मौसम हो, तो व्यक्ति अधिक बार छींकता है। किसी कारण विशेष से होनेवाली छींकों में इनका आक्रमण बारंबार होता है। लगातार होनेवाली छींकों से नाक और मुंह से पानी बहने लगता है। कई बार रोगी जब बिस्तर से सोकर उठता तो उसे महसूस होता है कि उसकी नाक पूरी तरह से बंद है उस समय उसे छींकों पर छींकें आती हैं। दही, केला, बर्फ का पानी, आइसक्रीम आदि पदार्थों का सेवन करने से छीकों का आक्रमण बहुत बढ़ जाता है। इसके कारणों में एलर्जी को एक बहुत प्रमुख और महत्त्वपूर्ण कारण माना गया।

उपचार: बहुत अधिक छींकें आने पर हरिद्रा खण्ड नामक औषधि का सेवन उपयोगी माना गया है। यह औषधि हल्दी एवं कुछ अन्य वानस्पतिक द्रव्यों के साथ मिलाकर बनाई गई है। इसका एक–एक चम्मच चूर्ण गर्म जल या गर्म दूध में मिलाकर, दिन में चार बार रोगी को सेवन कराना चाहिए।

इस रोगी को षड्बिंदु तैल या अणु तैल की

नसवार (नस्य या ऊपर की ओर जोर से खींचना) देनी चाहिए। षड्बिंदु तैल की 6–6 बूंदें तथा अणु तैल की 20–20 बूंदें प्रत्येक नथुने में डालकर सांस के द्वारा ऊपर की ओर खींचनी चाहिए। इनको डालने से छींकों का दौरा कुछ अधिक हो सकता है तथा नाक से पानी आने लगता है। ऐसा शुरू के दो दिनों में हो सकता है। उसके बाद रोगी को कोई परेशानी नहीं होती और वह बाद में आराम से इस नस्य का प्रयोग करने लगता है। एक वयस्क व्यक्ति यदि एक मास तक लगातार इन तेलों का प्रयोग नस्य के रूप में करता रहे, तो छींकों से छुटकारा पाने के लिए काफी हैं।

सामान्य तौर पर छींकोंवाले रोगी में कब्ज पाई जाती है। इस कब्ज को दूर करने के लिए उसे रात को सोते समय एक प्याला गर्म दूध या गर्म जल के साथ 2–4 चम्मच अगस्त्य रसायन नामक औषधि का सेवन कराना चाहिए। इसके सेवन से कब्ज दूर होती ही है, इसके साथ–साथ यह औषधि शरीर के सभी अंगों, विशेष रूप से फेफड़ों, गले और नाक की श्लेष्मल झिल्ली पर टॉनिक का प्रभाव उत्पन्न करती है। अतः इस रोग के दुबारा आक्रमण से बचने के लिए छींकों के दौरे समाप्त होने के बाद भी रोगी को इस औषधि का सेवन कराते रहना चाहिए। एक साधारण रोगी के लिए इसका 6 महीने का कोर्स पर्याप्त है।

आहारः हल्दी, लहसुन, अदरक और काली मिर्च का प्रयोग रोगी के लिए अधिक मात्रा में करना चाहिए। क्योंकि ये द्रव्य रोग की चिकित्सा के साथ–साथ उससे बचाव भी करते हैं। सब्जियों में लहसुन के प्रयोग के अलावा भी रोगी को दिन में दो बार इसकी 10–10 गिरियां प्रतिदिन खिलानी चाहिए। इनका सेवन कच्चे रूप में किया जा सकता है। परंतु यदि दुर्गंध के कारण रोगी कच्चे लहसुन का सेवन न कर पाए, तो इसे मक्खन या घी के साथ भूनकर (भूरा होने पर) भी रोगी को दिया जा सकता है। भूनने से इसकी गंध तो समाप्त हो जाती है, परंतु औषधीय प्रभाव कम हो जाता है। इस रोगी को पेट साफ रखने के लिए पत्तेवाली सब्जियों का सेवन अधिक मात्रा में करना चाहिए। चावल का सेवन इन रोगियों के लिए ठीक नहीं है। दही, केला, तले हुए पदार्थ तथा बर्फ से ठण्डे किए गए पेय–पदार्थों का सेवन रोगी के लिए सख्त मना है।

अन्य आचार–व्यवहारः जब रोगी को बहुत अधिक छींक आ रही हों, तो उसे सिर का स्नान नहीं करना चाहिए। बारिश में भीगना और ठण्डी हवा का लगना रोगी को बहुत हानि पहुंचा सकता है। धूल और फैक्टरियों के धुएं से रोगी को बचकर रहना चाहिए क्योंकि इनसे रोग बढ़ सकता है।

आर्य समाज आवासीय भवन, चकराता का पुनर्निमाण

आदरणीय बन्धओं, आपको जानकर हर्ष होगा कि आर्य समाज चकराता की स्थापना वर्ष 1920 में हुई थी। आर्य समाज भवन का पुनर्निमाण आप सभी आर्यों के सहयोग से लगभग 5 वर्ष पूर्व पूर्ण किया जा चुका है लेकिन आवासीय भवन जर-जर स्थिति में है जिसका पुनर्निमाण अतिशीघ्र करने की आवश्यकता है। भवन के पुनर्निमाण के पश्चात् आप अपने परिवारजनों के साथ इस अति सुन्दर हिलस्टेशन पर सुखद समय व्यतीत कर सकेंगे। यह सुनिश्चित किया जायेगा कि इस स्थान पर शाकाहारी, शुद्ध भोजन की व्यवस्था भी रहे क्योंकि चकराता में शाकाहारी भोजन मिलने में बहुत कठिनाई होती है। इसके अलावा होटल भी बहुत महंगे हैं और टूरिस्ट सीजन में होटलों में जगह नहीं मिलती। इस पुनीत कार्य हेतु आप श्री तीरथ कुकरेजा, प्रधान, आर्य समाज चकराता को आर्य समाज मन्दिर चकराता के नाम से चैक/ड्राफ्ट द्वारा धनराशि दे सकते हैं अथवा डिस्ट्रिक्ट कोओपरेटिव बैंक, देहरादून खाता सं. 001334001001788, IFS Code: YESB0DZSB06 में जमा करके दूरभाष सं. 8755525556 पर सूचित कर सकते हैं ताकि आपको धन प्राप्ति की रसीद भेजी जा सके। आप भवन निर्माण हेतु सीमेन्ट, सरिया, रोड़ी, बजरी आदि देकर भी मदद कर सकते हैं। अभी तक दानी महानुभाव द्वारा लगभग 2 लाख रुपए दान स्वरूप प्राप्त हो चुका है। मार्च 2023 में कार्य प्रारम्भ करने की योजना है। धन्यवाद।

खांसी के लिए कुछ घरेलू नुस्खे

-डॉ0 प्रेमदत्त पाण्डेय

खांसी को मामूली नहीं समझना चाहिए। एक कहावत है–रोग का घर खांसी, लड़ाई को घर हांसी। यदि इलाज करते हुए भी, दो सप्ताह में खांसी ठीक न हो, तो फिर जरा भी देर न करके चिकित्सक से इलाज कराना चाहिए। खांसी कई कारणों से होती है। यहाँ साधारण कफजन्य खांसी का घरेलू इलाज प्रस्तुत किया जा रहा है।

1. यदि गले में खराश और सूजन होने से खांसी चल रही हो तो एक गिलास कुनकुने गर्म पानी में आधा चम्मच नमक, आधा चम्मच खाने का सोड़ा और चावल बराबर पिसी हुई सफेद या लाल फिटकरी घोल कर तीन–तीन घण्टे से गरारे करना चाहिए। सुबह उठ कर दन्त मंजन करने के बाद, भोजन के बाद और सोने से पहले गरारे अवश्य करना चाहिए। 2 से 3 दिन में ही आराम हो जाएगा। चिकने और खट्टे पदार्थों तथा अचार चटनी आदि खटाई का सेवन न करें।

2. यदि सर्दी जुकाम के कारण कफ युक्त खांसी होती है तो सुबह 2 कप पानी में आधा चम्मच पिसी मुलहठी डाल कर उबालें। जब पानी आधा कप बचे तब उतार कर छान लें और पी जाएं। इससे बढ़ा हुआ और जमा हुआ कफ आसानी से निकल जाएगा और खांसी में आराम हो जाएगा। यह प्रयोग सूखी खांसी को भी ठीक करता है।

3. सर्दी खूब तेज हो, नाम भरी रहती हो तथा खांसी में कफ गिरता हो तो सोते समय उबलते और भाप निकलते पानी में विक्स वेपोरब आधा चम्मच लेकर घोल लें और सिर पर मोटा तौलिया ओढ़ कर उठती हुई भाप के ऊपर झुक कर, मुंह व नाक से खूब गहरी सांस लें ताकि भाप गले और नाक से फेफड़ों तक पहुंचे। 5 से 6 बार सांस लेकर मुंह से हटा लें फिर 5 से 6 बार भपारा लें। ऐसा 8 से 10 बार करें और ओढ़ कर लेट जायें। 15–20 मिनट बाद आधा चम्मच पिसी हल्दी थोड़े से दूध में घोल लें और पी कर ऊपर से एक गिलास गर्म दूध पी लें। इसके बाद ठण्डा पानी न पियें। औढ़ कर सो जाएं। 2–3 दिन में ही सर्दी–खांसी और गले की खराश ठीक हो जाएगी।

4. कत्था, बबूल का गोंद और मुलहठी तीनों को 10–10 ग्राम चूर्ण में थोड़ा सा गुड़ मिला कर अदरक के रस में घोंट कर काबुली चने के बराबर गोलियां बना लें। यह 1–1 गोली मुंह में रख कर चूसने से खांसी ठीक हो जाती है।

5. हल्दी की गांठ चूसने से और रात को हल्दी का टुकड़ा मुंह में रख कर सोने से खांसी ठीक होती है।

6. रात को खांसी चलती हो और सोना मुश्किल होता हो तो काले नमक का टुकड़ा या बबूल के गोंद का टुकड़ा या मुलहठी का टुकड़ा मुंह में रख कर चूसने से खांसी का ठसका बन्द हो जाता है।

7. खदिरादि वटी, लवंगादिवटी या एलादि वटी की गोली मुंह में रख कर चूसने से खांसी ठीक होती है।

8. तुलसी की 11 पत्ती, 2 काली मिर्च, 1 चुटकी सोंठ चूर्ण और 1 चुटकी सेन्धा नमक–इनको 2 कप पानी में उबालें। जब पानी आधा कप शेष बचे तब छान कर 1 चम्मच पिसी मिश्री घोल कर पी जाएं। यह उपाय सुबह शाम करें। इससे सर्दी, खांसी, हाथ पैरों की टूटन और सड़पन तथा गले की खराश ठीक होती है। इन कारणों से हुए ज्वर में भी आराम होता है।

9. अडूसा(वासा) के 10–12 पत्ते दो गिलास पानी में उबालें। जब पानी एक गिलास बचे तब उतार कर मसल कर कपडे से छान लें। इस पानी को 2–2 चम्मच 2–2 घण्टे से पीने से खांसी ठीक हो जाती है।

अदरक का रस आधा चम्मच और आधा चम्मच शहद मिला कर दिन में 3 से 4 बार चाटने से सर्दी, खांसी, कफ प्रकोप आदि व्याधियों ठीक हो जाती है।

आत्मा का हनन करने वाले अज्ञानमयी आसुरी योनियों में जाते हैं

-प्रो0 रामप्रसाद वेदालंकार जी

असुर्या नाम ते लोकाऽअन्धेन तमसावृताः
ताँस्ते प्रेत्याभि गच्छन्ति ये के चात्महनो जनाः

जो कोई भी आत्मा का हनन करने वाले जन, अर्थात् आत्मा के विपरीत आचरण करने वाले लोग होते हैं वे मर कर उन लोकों में जाते हैं, उन योनियों में जाते हैं जो प्रगाढ़ अन्धकार, अर्थात् अविद्यान्धकार से आच्छादित–घिरे हुए प्राण–पोषण के असुर सम्बन्धी, प्रकाश विहीन लोक हैं, योनियाँ हैं।

जो जन आत्मा का सदा हनन करते रहते हैं, आत्मा के सदा विपरीत आचरण करते रहते हैं, आत्मा के सदा विरुद्ध आहार और व्यवहार करते रहते हैं, वे जहाँ जीते जी अपने इस जीवन में दुर्गति को प्राप्त होते हैं वहाँ वे मरकर भी उन लोकों को, उन स्थानों को, उन शरीरों को, उन योनियों को प्राप्त होते हैं जो अविद्या से सदा आवृत रहती हैं, जो रज–तम से सदा ढ़की हुई रहती हैं, जिनमें कि केवल प्राण–पोषण ही चलता रहता है। ज्ञान–प्रकाश का भानु जिनमें कि कभी उदय ही नहीं होता, ऐसी होती हैं वे योनियाँ जिनमें कि वे मर कर जाते हैं।

इसलिए मनुष्यों को चाहिए कि वे जो भी कर्म करें, जो भी आचरण करें, जो भी आहार और व्यवहार करें, वे सब आत्मा के अनुकूल ही करने का प्रयास करें–अपनी अन्तः प्रेरणा (Conscience) के अनुसार ही करें। मनु जी के शब्दों में कहा जाए तो ''स्वस्य च प्रियमात्मनः'' जो कर्म अपनी आत्मा को प्रिय लगे, जो व्यवहार अपनी आत्मा को तृप्त करने वाला हो, वही मनुष्य को करना चाहिए। महाभारत में महर्षि व्यास के कथन के अनुसार ''आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्'' मनुष्य

को चाहिए कि– "जो व्यवहार अपनी आत्मा के प्रतिकूल हों उन व्यवहारों को वह दूसरों के प्रति न करे।'' इसकी एक पहचान यह है कि यदि वह आत्मा के अनुकूल कार्य करेगा तो उसे उस कर्म के करने में भीतर से सहज ही आनन्द, उत्साह और निर्भयता का अनुभव होगा, और यदि वह अपनी आत्मा के विरुद्ध आचरण करेगा, आत्मा के विपरीत कर्म–व्यवहार करेगा तो उसे उस कार्य के करने में सहज ही भय, शंका और लज्जा का अनुभव होगा। ये ध्वनियाँ, ये अनुभूतियाँ आरम्भ–आरम्भ में तो पर्याप्त वेग से प्रतीत होती रहती हैं, परन्तु ज्यों–ज्यों मनुष्य इनकी अवहेलना, इनकी लापरवाही करता रहता है, त्यों–त्यों ये धीमी, अर्थात् मन्द पड़ती हुई प्रतीत होने लगती है फिर कभी ये किन्हीं विशेष परिस्थितियों में अपने महत्त्व का बोध कराती हैं। इस पर भी यदि कोई न जगे, कोई न समझे, तो फिर उनकी अवहेलना करने पर जहाँ मनुष्य अपने जीवन में अपमानों को, तिरस्कारों को, दुर्गतियों और दुरवस्थाओं को प्राप्त होते हैं वहाँ वे मृत्यु के अनन्तर भी केवल प्राण–पोषण, केवल भोग–विलास आदि ही जिनका लक्ष्य हो, ऐसे असुर कुलों में, ऐसे निकृष्ट कुलों में वे जन्म लेते हैं, अर्थात् ऐसे पतित कुलों में वे जन्मते हैं कि जो सदा अज्ञानान्धकार से आवृत रहते हैं। ज्ञान का भानु तो उन कुलों में कभी उदय ही नहीं होता। बस खाना–पीना और मौज उड़ाना मात्र ही उनमें उनका लक्ष्य रहता है या फिर उन

पशु योनियों में वे जाते हैं जहाँ खाना–पीना और सन्तान उत्पन्न करना मात्र ही उनका कार्य रहता है। अतः मनुष्यों को चाहिए कि वे अपनी आत्मा के विपरीत आचरण कभी न करें, सदा आत्मा के अनुकूल ही वे आचरण करें, सर्वदा आत्मा के अनुरूप ही वे आहार, विहार और व्यवहार करें।

सर्वव्यापक परमेश्वर का स्वरूप

अनेजदेकं मनसो जवीयो नैनद्देवाऽआप्नुवन् पूर्वमर्षत्।
तद्धावतोऽन्यानत्येति तिष्ठत्तस्मिन्नपो मातरिश्वा दधाति।

जो परमेश्वर एक है, अद्वितीय है, अचल है, स्थिर है, गतिरहित है, मन से भी अधिक वेगवाला है, पहले ही अपनी व्याप्ति से सर्वत्र पहुँचा हुआ है। अर्थात् जहाँ कोई और चलकर पहुँचता है, वहाँ वह व्यापक होने से प्रथम ही विराजमान रहता है। इसको ये इन्द्रियाँ प्राप्त नहीं कर सकतीं अर्थात् वह इन्द्रियों का विषय न होने से इन्द्रियों से नहीं जाना जा सकता, वह ठहरा हुआ भी, स्थिर होता हुआ भी अपनी अभिव्याति से अन्य दौड़ते हुओं को लाँघ जाता है, अन्य दौड़ते हुओं को पीछे छोड़ जाता है। उसी सर्वव्यापक परमेश्वर में यह मातरिश्वा–जीव कर्मों को धारण करता है।

ईश्वर एक है, अचल है, निश्चल है, स्थिर है, फिर भी वह इस मन से भी अधिक वेगवाला है, क्योंकि वह सर्वव्यापक होने से इस मन से भी पूर्व सर्वत्र पहुँचा हुआ होता है। सर्वदा सर्वत्र विराजमान रहने पर भी इसको ये इन्द्रियाँ प्राप्त नहीं कर पातीं, ये इन्द्रियाँ जान नहीं पातीं क्योंकि इन इन्द्रियों का यह विषय है ही नहीं। जैसे आँख का विषय रूप है, अतः वह रूप का ही साक्षात् कर सकती है, शब्द का नहीं। क्योंकि शब्द आँख का विषय है ही नहीं। इसी तरह कान का विषय शब्द है। अतः वह उस शब्द को ही सुन सकता है, पर वह रूप को नहीं देख सकता, क्योंकि रूप कर्णेन्द्रिय का विषय है ही नहीं। इसी तरह नासिका का विषय गन्ध है। अतः वह गन्ध को ग्रहण कर सकती है, पर स्वाद को नहीं, क्योंकि स्वाद नासिका का विषय है ही नहीं। रस रसना– जिह्वा का विषय है अतः रसना उसका रस ले सकती है, त्वचा नहीं क्योंकि रस इस त्वग् रूप इन्द्रिय का विषय है ही नहीं। यह एक ऐसा अद्वितीय तत्त्व है कि जो ठहरा हुआ भी अन्य सब दौड़ने वालों को पीछे छोड़ जाता है, क्योंकि यह सर्वव्यापक है, कण–कण और क्षण–क्षण में रमा हुआ है। इस सर्वदा सर्वत्र वर्तमान रहने वाले परब्रह्म परमेश्वर के भीतर ही सब जीव, सब प्राणी अपने–अपने कर्म करते रहते हैं।

**अपनी भूलों से सबक लेने की बजाय,
दूसरों की भूलों से सबक लेना
बढ़िया और कम पीड़ादायक है
स्वयं भूल न करें, दूसरों से सीखें**

प्रथम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम और स्वामी दयानन्द सरस्वती

–डॉ० महेश कुमार शर्मा

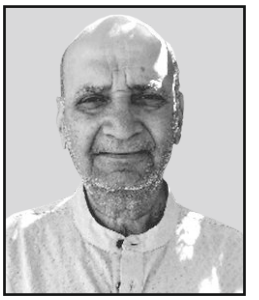

भारत में स्वाधीनता प्राप्ति के लिए, वर्ष 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के पीछे वैचारिक क्रांति को देखा जा सकता है। देशवासियों को वैचारिक प्रेरणा देनेवालों में महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी और उनके गुरु मथुरा के प्रज्ञाचक्षु दण्डी स्वामी विरजानंद जी के साथ–साथ अन्य साधु–संन्यासियों ने उल्लेखनीय भूमिका निभाई थी ।

ये संन्यासी स्वराज्य वैचारिक क्रांति के मन्त्रद्रष्टा व मन्त्रदाता थे और उन्होंने भारत की पराधीनता की पीड़ा को तीव्रता से अनुभव करते हुए अपनी अन्तःवेदना विचारों द्वारा क्रांतिवीरों को दीं। वीतराग साधु–संत–संन्यासी वर्ग सदा से ही राष्ट्रीय विपत्ति के समय देश की रक्षा के लिये आगे आते रहे हैं।

17 वीं सदी में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी व्यापार के उद्देश्य से भारत में आई थी । ईस्ट इंडिया कम्पनी ने भारत के मुगल सम्राट नुरुद्दीन सलीम जहांगीर से वर्ष 1615 में भारत में व्यापार करने के लिए एक संधि की थी । कंपनी भारत में अलग–अलग स्थानों पर फैक्ट्री व ट्रेडिंग सेन्टर खोलकर व्यापार करती रही।

वर्ष 1857 की भारतीय राज्य क्रान्ति से लगभग सौ वर्ष पहले बंगाल में प्लासी और बिहार में बक्सर के युद्ध में ईस्ट इंडिया कंपनी की जीत के फलस्वरूप कंपनी ने व्यापार के साथ–साथ सारे भारत में अपना प्रभाव फैलाना प्रारंभ कर दिया। प्रथम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम आरंभ होने से पहले तक कंपनी ने देश के अनेक राज्यों को अंग्रेजी राज्य में मिला लिया था।

वर्ष 1857 में ईस्ट इंडिया कंपनी राज के विरूद्ध भारतीय राज्य व जन क्रान्ति कोई अचानक भड़का हुआ राष्ट्रीय विद्रोह नहीं था वरन् इसके पीछे कई आधारभूत कारण थे। इस स्वतंत्रता संग्राम के विभिन्न राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक, सामाजिक और सैनिक कारण बताये जाते हैं ।

सैनिक विद्रोह का प्रारम्भ पैटन्न 1853 एन फील्ड बन्दूक की वजह से हुआ था। इस बन्दूक को भरने के लिए बारूद युक्त कारतूस को दांतों से छीलकर, काटकर खोलना पड़ता था। इस कारतूस में गाय और सूअर की चर्बी का प्रयोग किया जाता था जिसे सैनिकों ने प्रयोग करने से साफ मना कर दिया था। यह चर्बीवाला कारतूस वर्ष 1857 के गदर का एक प्रमुख कारण बना।

वेद से स्वतंत्र चिन्तन शक्ति पानेवाले उदारचेता स्वामी दयानन्द सरस्वती जी अपनी मातृभूमि को पराधीनता में जकड़ा देखकर चुप बैठे रहे, यह संभव ही नहीं था। प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में महर्षि दयानन्द जी ने सक्रिय भूमिका निभाई थी। ऋषिवर देव दयानन्द जी ने सत्यार्थप्रकाश में पराधीनता पर अपना ध्यान केंद्रित कर, देश की स्वतंत्रता का मूलमंत्र देशवासियों को दिया था।

स्वामी दयानन्द जी ने यह महसूस किया था कि भारत के लोग अब अंग्रेजों के अत्याचारी शासन से तंग आ चुके हैं और देश की स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करने को आतुर हो उठे हैं। पराधीन भारत में यह कहने का साहस सर्वप्रथम महर्षि दयानंद सरस्वती जी ने ही किया था कि आर्यावर्त (भारत) आर्यवर्तीयों (भारतीयों) का है।

वर्ष 1855 के हरिद्वार के कुंभ के मेले के दौरान स्वामी दयानन्द जी वहाँ नाना साहेब पेशवा, तांत्या टोपे, अजीम उल्ला खां, बाला साहेब, महारानी लक्ष्मीबाई, बाबू वीर कुंवर सिंह और अन्य क्रांतिकारियों से मिले थे। क्रान्तिकारियों से वार्तालाप के उपरान्त यह तय किया गया था कि फिरंगी सरकार के विरुद्ध देश में सशस्त्र समर के लिए आधार भूमि तैयार की जाये और उसके बाद एक निश्चित दिन सारे भारत में एक साथ विद्रोह का बिगुल बजा दिया जाये। सारे देश में क्रांति की आवाज को एक गुप्त प्रणाली से चुपचाप पहुँचाने के लिए कमल पुष्प तथा चपाती की भी योजना यहीं तैयार की गई।

विदेशियों द्वारा भारत की दुर्दशा और अंग्रेजों के अत्याचारों व शोषण को देखकर स्वामी दयानन्द जी व्यथित हो उठे थे। अंग्रेजों से मुकाबला करना साधारण राज्य सत्ता की शक्ति से बाहर की बात थी। स्वामी दयानन्द जी के नेतृत्व में साधु–संन्यासियों ने भी सम्पूर्ण देश में क्रांति का अलख जगाया था। वे अंग्रेजों को उखाड़ फेंकने के लिए सारे देश में क्रांति की ज्वाला एक साथ जलाना चाहते थे। जीवन के हर क्षेत्र में स्वतंत्रता की अभिव्यक्ति देनेवाले संन्यासी स्वामी दयानन्द जी द्वारा देश की स्वतंत्रता का यह शंखनाद ही आगे चलकर भारत के जन–मन में गूंजने लगा। वर्ष 1857 का गदर केवल सैनिक क्रांति नहीं थी परन्तु दो राष्ट्रों का स्वाधीनता संग्राम था, राज बदलो क्रांति युद्ध था।

प्रज्ञाचक्षु दण्डी गुरु विरजानंद जी वर्ष 1857 के स्वतंत्रता संग्राम जैसे मनोवैज्ञानिक विकट समय में हाथ पर हाथ धरे नहीं बैठे रहे थे। उन्होंने देश की स्वतंत्रता के लिए महनीय आयोजन की योजना की थी। उनकी देशभक्ति अनुपम व अटूट थी। इस स्वतंत्रता संग्राम में अधिकतर जिन राजा–महाराजाओं ने भाग लिया था, वे सब दण्डी विरजानंद जी के शिष्य थे और उनसे ही प्रेरणा पाकर इन राजा–महाराजाओं ने आजादी की लड़ाई में जूझने का प्रयास किया था।

इस कथन की सत्यता का ऐतिहासिक सबूत शिरोमणि "सर्व खांप पंचायत" के दस्तावेजों से मिलता है। इन्हीं पंचायतों के माध्यम से सन् 1856 में सारे इलाके के लोगों को विदेशी राज्य के विरुद्ध संघर्ष करने और उसका तख्ता पलटने के लिए महामना दण्डी स्वामी विरजानंद जी ने उत्तेजित किया था, जिसके फलस्वरूप दण्डी जी के शिष्यों ने आंदोलन शुरू कर दिया था, जो एक वर्ष बाद पूरे उत्तर भारत में आग की तरह फैल गया था। दण्डी स्वामी विरजानंद जी स्वयं इस सार्वदेशिक आंदोलन के अग्रणी थे।

राष्ट्रीय सशस्त्र विद्रोह प्रारंभ होने के कई महीनों पहले से ही तनाव का वातावरण बन गया था और कई विद्रोहजनक घटनाएँ घटीं। ईस्ट इंडिया कंपनी के राज में जब लॉर्ड कैनिंग गवर्नर जनरल थे, तब वर्ष 1857 की महान् क्रांति हुई थी। इस विद्रोह का आरंभ छावनी क्षेत्रों में छोटी–मोटी झड़पों तथा आगजनी से हुआ था परन्तु बाद में इसने एक बड़ा रूप ले लिया। सैनिकों ने नये कारतूसों का प्रयोग करने से इन्कार कर दिया था।

मंगल पांडेय बंगाल नेटिव इन्फैन्ट्री में एक सिपाही थे। उन्होंने गाय व सूअर की चर्बी मिले नये कारतूस को मुँह से छीलने–काटने से स्पष्ट मना कर दिया था। उन्होंने रेजीमेंट के एक अफसर पर हमला कर उसे घायल कर दिया । मंगल पांडेय का कोर्ट मार्शल कर दिया गया और 8 अप्रैल, 1857 को 30 वर्ष की आयु में उन्हें फाँसी दे दी गई। इतिहास गवाह है कि शहीद मंगल पांडेय द्वारा लगाई गई विद्रोह की चिंगारी बुझी नहीं।

मेरठ के पुलिस प्रमुख कोतवाल धनसिंह गुर्जर के नेतृत्व में 10 मई, 1857 को विद्रोही सैनिकों और अन्य क्रांतिकारियों ने ईस्ट इंडिया कंपनी के विरुद्ध क्रांतिकारी घटनाओं को अंजाम दिया था। विद्रोही सैनिक और अन्य क्रांतिकारी दिल्ली की ओर मुगल बादशाह बहादुर शाह जफर से मदद माँगने के

लिए कूच कर गए थे और यह विद्रोह मेरठ के देहात और अन्य स्थानों में फैल गया था।

ब्रिटिश सरकार ने धनसिंह गुर्जर को मुख्य रूप से दोषी मानकर 4 जुलाई, 1857 को फाँसी पर लटका दिया था। उस समय उनकी आयु केवल 37 वर्ष थी। स्वतंत्रता का यह विप्लव देखते–देखते पूरे उत्तरी व मध्य भारत में फैल गया जिससे अंग्रेजों को स्पष्ट संदेश मिल गया कि अब भारत में राज्य करना उतना आसान नहीं जितना वे समझ रहे थे।

सन् 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संघर्ष की वीरांगना झाँसी की महारानी लक्ष्मीबाई का जन्म और लालन–पालन वाराणसी में हुआ था। शिक्षा के साथ–साथ तीरंदाजी, तलवार व बन्दूक चलाना, घुड़सवारी आदि तथा युद्ध की कला–कौशल उन्होंने बचपन में ही सीख ली थी। अपने पति झाँसी नरेश महाराज गंगाधर राव नेवालकर के देहांत के बाद, रानी लक्ष्मीबाई ने झाँसी राज्य का राज–काज स्वयं सँभाल लिया था।

झाँसी, सन् 1857 के स्वतंत्रता संग्राम का एक प्रमुख केंद्र बन गया था, जहां अंग्रेजी सत्ता के विरुद्ध हिंसा भड़क उठी थी। मार्च, 1858 में ब्रितानी सेना ने लड़ाई के बाद झाँसी नगर पर कब्जा कर लिया। रानी लक्ष्मीबाई अपने पुत्र दामोदर राव के साथ अंग्रेजों से बचकर भाग निकलने में सफल हो गयीं। रानी लक्ष्मीबाई, नाना साहेब और तांत्या टोपे की संयुक्त सेनाओं ने ग्वालियर के एक किले पर कब्जा कर लिया।

अंग्रेजी सेना ने ग्वालियर के किले पर आक्रमण कर दिया। रानी लक्ष्मीबाई की सेना के साथ घमासान युद्ध हुआ। रानी ने अपने शौर्य से अंग्रेजों के दांत खट्टे कर दिये थे। ब्रितानी सेना ने अपनी पूरी ताकत से भयंकर युद्ध करके ग्वालियर के किले को अपने कब्जे में कर लिया। 18 जून, 1858 को 30 वर्ष की आयु में ग्वालियर में अंग्रेजी सेना से लड़ते–लड़ते वीर महारानी लक्ष्मीबाई ने प्राणांत किया।

शूरवीर, वीरांगना व साहसी झाँसी की महारानी लक्ष्मीबाई ने न केवल भारत परन्तु विश्व की महिलाओं, नारी शक्ति को गौरवान्वित किया है। उनका जीवन स्वयं में वीरोचित गुणों से भरपूर अमर देशभक्ति, वीर गति और बलिदान की अनुपम गाथा है।

नाना राव साहेब सन् 1857 के स्वतंत्रता संग्राम के शिल्पकार थे। इनके पिता पेशवा बाजीराव (द्वितीय) के संगोत्र भाई थे। पेशवा ने बालक नाना राव को अपना दत्तक पुत्र स्वीकार किया और उनकी शिक्षा–दीक्षा का यथेष्ट प्रबंध किया। पेशवा बाजीराव के निधन होने के बाद नाना राव ने 27 वर्ष की आयु में पेशवा की सभी उपाधियों को धारण कर लिया परन्तु ब्रिटिश सरकार ने उनकी पेशवाई उपाधियों को स्वीकार नहीं किया।

नाना साहेब को अंग्रेज सरकार के इस रुख से बड़ा कष्ट हुआ। वे चुपचाप बैठने वाले व्यक्ति नहीं थे। उन्होंने अंग्रेजों को भारत से बाहर खदेड़ने और उनके विरुद्ध क्रांति की लौ जगाने के लिए देश में अनेक स्थानों की तीर्थयात्रा की और वहाँ कई क्रांतिकारियों से भेंट की। नाना साहेब ने महर्षि दयानन्द सरस्वती जी और प्रज्ञाचक्षु दण्डी गुरु विरजानंद जी से मिलकर भारत की स्वतंत्रता के विषय पर विचार–विमर्श किया था और पथ–प्रदर्शन के लिए आग्रह किया था।

मेरठ में 10 मई, 1857 को क्रांति का श्रीगणेश होने पर नाना साहेब ने कानपुर में अंग्रेजों के विरुद्ध युद्ध की घोषणा की और वहाँ सैन्य विद्रोह हुआ। कानपुर को अंग्रेजों से जीतने के बाद, नाना साहेब ने खुद को पेशवा घोषित किया। बाद में अंग्रेजी सेना ने कानपुर को वापस कब्जे में ले लिया। नाना साहेब पेशवा ने अनेक कष्ट सहे परन्तु उन्होंने फिरंगियों के सम्मुख कभी आत्मसमर्पण नहीं किया।

स्वतंत्रता संग्राम में असफल होने के बाद नाना साहेब पेशवा नेपाल से होकर अफगानिस्तान जाकर,

गुजरात आये थे। वे भारत को स्वाधीन होता नहीं देख पाये थे। ऐसा कहा जाता है कि नाना साहेब का देहांत सन् 1903 में 79 वर्ष की आयु में हुआ था और उनकी समाधि गुजरात के शहर भावनगर में बनी हुई है। निस्संदेह नाना साहेब पेशवा का त्याग एवं उनकी वीरता और सैनिक योग्यता उन्हें भारतीय इतिहास के प्रथम आजादी के संघर्ष के एक प्रमुख सेनानायक के आसन पर बैठा देती है।

तांत्या टोपे का पूरा नाम रामचन्द्र पांडुरंग येवलकर था परन्तु लोग स्नेह से उन्हें तांत्या के नाम से पुकारते थे। तांत्या के पिता पेशवा बाजीराव (द्वितीय) के कर्मचारियों में से एक थे। तांत्या ने पेशवा बाजीराव के यहाँ तोपखाने में नौकरी की। तोपखाने में कार्य करने के कारण, उनके नाम के साथ टोपे जुड़ गया ।

मेरठ में स्वतंत्रता संग्राम के विद्रोह की शुरुआत होने पर तांत्या टोपे ने पेशवा नाना साहेब के नेतृत्व में अंग्रेजों के विरुद्ध इस आंदोलन में कानपुर आदि स्थानों पर अनेक लड़ाईयां लड़ीं। तांत्या टोपे, नाना साहेब के योग्य सैनिक सलाहकार और अद्वितीय सेनापति थे। कई स्थानों पर उन्हें रोमांचकारी सफलता मिली और कई स्थानों पर उनकी पराजय भी हुई थी। पराजय से तांत्या टोपे कभी विचलित नहीं हुए थे। विद्रोह के असफल होने के करीब एक साल बाद तक तांत्या टोपे ने मुट्ठी भर सैनिकों के साथ जबर्दस्त छापेमार युद्ध का संचालन करते हुए अंग्रेजी सेना को झकझोरे रखा। इस दौरान उनका जीवन अनमोल शौर्य गाथा से भरा हुआ था।

वर्ष 1859 में तांत्या टोपे पकड़ लिए गए और विद्रोह तथा अंग्रेजों के विरुद्ध युद्ध लड़ने के आरोप में 18 अप्रैल, 1859 को उन्हें फाँसी पर लटका दिया गया। ऐसा कहा जाता है कि फाँसी के तख्ते पर झूलनेवाला कोई देशभक्त था जिसने तांत्या टोपे की जान बचाने के लिए अपना बलिदान दिया था। असली तांत्या टोपे इसके बाद भी अनेक वर्षों तक जीवित रहे और बाद में 95 वर्ष की आयु में वे स्वभाविक मौत मरे। तांत्या टोपे प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के एक प्रमुख सेनानायक थे। इस महान विद्रोह में उनकी भूमिका महत्वपूर्ण, प्रेरणादायक और बेजोड़ थी।

मुगल साम्राज्य के आखिरी शहंशाह बहादुर शाह जफर (द्वितीय) ने प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में अंग्रेजों के विरुद्ध भारतीय सिपाहियों का नेतृत्व किया था। फिरंगियों के विरुद्ध स्वतंत्रता संग्राम की चिंगारी मेरठ में भड़कने के बाद, विद्रोही सैनिकों ने अंग्रेजों के खिलाफ मोर्चा खोल दिया। बगावत करनेवाले सैनिकों ने दिल्ली पहुँचकर मुगल बादशाह बहादुर शाह जफर से ईस्ट इंडिया कंपनी के खिलाफ जंग जीतने के लिए सैनिक सहायता की माँग की जो उन्होंने स्वीकार की। 82 वर्ष के बूढ़े बहादुर शाह जफर के नेतृत्व में अंग्रेजों को हिन्दुस्तान से बाहर खदेड़ने के लिये विद्रोहियों ने अंग्रेजों के विरुद्ध ईंट से ईंट बजा दी। भारतीयों ने दिल्ली और अन्य हिस्सों में अंग्रेजों को कड़ी शिकस्त दी परन्तु बाद में फिरंगी अंग्रेज बगावत को दबाने में कामयाब हो गए।

भारत की पहली जंग–ए–आजादी में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने में जफर को भारी कीमत चुकानी पड़ी थी। उनके पुत्रों और प्रपौत्रों को ब्रिटिश अधिकारियों ने सरे आम गोलियों से भून डाला था। युद्ध में हार और गिरफ्तारी के बाद बहादुर शाह जफर पर मुकदमा चलाकर, आजादी के लिए हुई बगावत को पूरी तरह से खत्म करने के मकसद से अंग्रेजों ने उन्हें बन्दी बनाकर देश से निर्वासित कर रंगून, बर्मा (अब म्यांमार) भेज दिया था। बहादुर शाह जफर ने 87 वर्ष की आयु में रंगून में बन्दी के रूप में दम तोड़ा था। निधन के बाद उन्हें रंगून में दफनाया गया था। उनके दफन स्थल को बहादुर शाह जफर दरगाह के नाम से जाना जाता है। बहादुर शाह जफर हमारी उस पहली

जंग–ए–आजादी के नायक हैं जिसमें हम हार भले ही गये थे परन्तु हिन्दू और मुसलमान क्रांतिकारियों ने उनके नेतृत्व में एक जुट होकर बहादुरी से संग्राम लड़ा था और अपनी एकता की शक्ति से अंग्रेजों में खौफ पैदा कर दिया था।

बेगम हजरत महल ने प्रथम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान लखनऊ में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के खिलाफ विद्रोह का नेतृत्व किया था। आखिरी ताजदार–ए–अवध नवाब वाजिद अली शाह की वे दूसरी छोटी पत्नी थीं। सन् 1856 में अंग्रेजों ने अवध पर कब्जा कर लिया था और अवध के नवाब वाजिद अली शाह को कलकत्ते में निर्वासित कर दिया गया था। बेगम हजरत महल ने अंग्रेजों द्वारा अपने शौहर के निर्वासन के बाद लखनऊ पर कब्जा कर लिया और अपने नाबालिग बेटे नवाबजादे बिरजिस कद्र को अवध का शासक नियुक्त किया तथा स्वयं अंग्रेजी सेना का डटकर मुकाबला किया। लखनऊ में पराजय के बाद वे अवध के देहातों में चली गईं और वहाँ भी उन्होंने क्रांति की चिंगारी सुलगाई थी।

पहली जंग–ए–आजादी की लड़ाई में अंग्रेजों से पराजय के बाद बेगम हजरत महल को नेपाल में शरण लेनी पड़ी थी, जहां वर्ष 1879 में उनकी 59 वर्ष की आयु में मृत्यु हुई। अवध की बेगम को काठमांडू की जामा–मस्जिद के मैदानों में एक अज्ञात कब्र में दफनाया गया था। प्रथम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में बेगम हजरत महल का योगदान बहुमूल्य रहा था।

पहली आजादी की लड़ाई लगभग एक वर्ष से अधिक समय तक चली। वर्ष 1858 में ब्रिटिश सत्ता के गवर्नर जनरल लॉर्ड कैनिंग ने शांति की घोषणा करते हुए कहा था कि विद्रोह को पूरी तरह से दबा दिया गया है। इस महान् आंदोलन की असफलता के कई कारण थे। पहला कारण, यह आंदोलन सीमित था। दूसरा कारण, प्रभावी नेतृत्व का अभाव था। तीसरा कारण, क्रांतिकारियों के पास सीमित संसाधन थे और चौथा कारण, मध्यम वर्ग की भागीदारी नहीं थी।

वर्ष 1857 के महान् आंदोलन के समाप्त होने के बाद 1858 ई. में ब्रिटिश संसद ने एक कानून पारित कर ईस्ट इंडिया कंपनी के अस्तित्व को खत्म कर दिया और अब भारत पर शासन का पूरा अधिकार ब्रिटेन की महारानी विक्टोरिया के हाथों में आ गया और पूर्व ईस्ट इंडिया कंपनी के क्षेत्रों को मिलाकर भारतीय साम्राज्य बना। अंग्रेजों ने प्रशासनिक परिवर्तन किया, भारत के गवर्नर जनरल के पद को वायसराय के पद के रूप में स्थानांतरित किया गया।

वर्ष 1857 की भारतीय क्रांति को दबाने के बाद, महारानी विक्टोरिया ने भारतीय जनमानस के धार्मिक भावों व सहिष्णुता पर मरहम लगाने के लिए एक लोक–लुभावनी घोषणा की थी। इसका प्रतिकार करते हुए महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी सत्यार्थ प्रकाश में लिखते हैं–"विदेशियों का राज पूर्ण सुखदायक नहीं है। कोई कितना ही करे परन्तु स्वदेशी राज्य सर्वोपरि उत्तम होता है, भारतभूमि ही पारसमणि है जिसके छूते ही विदेशियों का दारिद्रय भाग जाता है।"

वर्ष 1857 का महान् स्वतंत्रता आंदोलन आधुनिक भारत में ब्रिटिश शासन के इतिहास की एक अभूतपूर्व घटना थी। इसके कारण भारतीय समाज के कई वर्ग एक जुट हुए। हालाँकि, विद्रोह वांछित लक्ष्य को प्राप्त करने में विफल रहा लेकिन इसने भारतीय राष्ट्रवाद के बीज बो दिए। स्वतंत्रता क्रांति के परिणामस्वरूप भारतीयों में राष्ट्रीय एकता की भावना का विकास हुआ जिसका कालांतर में राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन में महत्वपूर्ण योगदान रहा। यह स्वतंत्रता संग्राम इसलिए भी अहम था क्योंकि भविष्य की भारत की आजादी की लड़ाई के लिए इसकी वजह से मार्ग प्रशस्त हुआ।

REQUEST FOR DONATION UNDER C.S.R.

Sir/Madam

Vedic Sadhan Ashram Tapovan Dehradun got fame in India when Mahatma Anand Swami Saraswati ji visited this area in 1944, 45, 46 and 47. Later Mahatma Prabhu Ashrit ji, Yogiraj Vyasdev Ji(Swami Yogeshwaranand Ji), Mahatma Dayanand Ji Vanprasthi, Swami Chiteshwaranand ji and many others sanyasis also meditated in this area time to time and reported made great progress in Yoga.

Tapovan Ashram was established by Bawa Gurumukh Singh in the year 1949 on persuasion of Mahatma Anand Swami Saraswati Ji.

Maharishi Dayanand Saraswati Ji founder of Arya Samaj, also visited Dehradun during the year 1879 and again in 1980. During 1979 Mahrishi Dyanand ji was instrumental in convincing 2 Hindu Youths of Vedic Philosophy and thus dissuading them not to convert to Christianity. After listening to his discourse on Vedic Philosophy for benefit of mankind, rising above sectarianism, one Mr. Mohd Umar of Deoband converted to Vedic Aryan philosophy and named as Alakhdhari. This was the first conversion (Shuddhi) in India initiated by Maharishi Dayanand Saraswati ji.

Vedic Sadhan Ashram society Tapovan is registered under societies act-1961 renewed up to 19 October 2025(copy enclosed). The main objective of Vedic Sadhan Ashram Society Tapovan Dehradun is the character building and giving practical training in Yogic Science on the basis of Vedic Dharma. The other objectives cover the following areas as under-

a. To open Vedic Centre for Vedic missionary.
b. To maintain Ayurvedic free Aushdhalaya for the service of the sick and the suffering.
c. Society will help to development/construction of water Tanks/Ponds and rain water harvesting schemes.
d. Society will also organise health awareness camps.
e. Society will also organise awareness camps related to agro products, dairy farming, animal care etc.
f. Society will also promoting gender equality empowering woman, setting up homes and hostels for women and orphans.
g. To reducing child mortality and improving maternal health by providing good hospital facilities and low cost medicines.
h. To providing hospital and dispensary facilities.
i. To ensuring environmental sustainability, ecological balance protection of flora & fauna, animal welfare etc.
j. To support/operate primary, middle and higher secondary school etc….(copy of aims & objective enclosed)

These objectives have been approved by government of India ministry of corporate affairs office of the Registrar of Companies for undertaking CSR activities and the

registration no. is CSR00007175(copy enclosed).

We are also registered with Income Tax department for section 12A and section 80G valid up to Year 2026-27 and quite regular in submission of Income Tax returns. Our Pan No. is AAAAV1656L.

Over the years we have established following programmes to implement aims & objectives of Vedic Sadhan Ashram Society Tapovan Dehradun.

I. To propagate Yog on practical basis in line with Yog Darshan of Mahrishi Patanjali. Regular training was imparted free of coast under the guidance of Masters of Yoga science like Mahatma Prabhu Ashrit ji, Swami Yogeshwaranand ji, Swami Satyapati ji mahraj, swami Dikshanand ji, Swami Divyanand ji, Acharya Ashish ji Darshnacharya, swami Chiteshwaranand ji etc, and this yoga training is still continue through Yog Shivirs, Yoga exercises and Meditation practiced in early morning hours everyday.
II. We have hospital building covering above 4000sqft area with OPD facilities but not able to run free of cost due to lack of funds.
III. We have junior high school having about 400 day scholars, all from poor families.
IV. We run gaushala having more than 30 cows.
V. We have forest covering about 50 Bighas of land.
VI. We are publishing monthly magazine "PAVMAN" for the last 34 years having readers from all corners of India.
VII. We are performing Yagya Morning & evening everyday for the last 72 years.
VIII. We organise "Chaturved Parayan Yagya" running for 30 days in the month of Feb-March every year for purifying the environment.
IX. We organise very grand Utshava free of cost for 5 days continuously twice a year in the month of May and October where thousands of man & woman enjoy and participate in Yagya and listen Pravachan of Vedic scholars. Donations given willingly are accepted and receipt issued as per Income Tax Provisions.

Planning for Future

(1) We are planning for rainwater conservations.
(2) We are planning for solar energy panel installations.
(3) We are planning for Gurukul based on Vedic principles for girl children from sixth class to Acharya Level(Post Graduation standard).
(4) We are planning for regular Ashtanga Yog training by teaching Darshans along with meditation for practically experiencing the teaching of Ashtangya Yog.
(5) We have plan to renovate 12 very old cottages containing to 2 rooms in each cottage to meetout present day requirements.

To fulfil our objectives and to completed the goal set by the society, we need financial assistance under C.S.R. for which all necessary formalities shall be completed by our society.

Sincerely

Prem Prakash
Secretary
Mob-9412051586

आशीर्वाद

-स्वामी विवेकानन्द परिव्राजक

''पुराने समय में यह परंपरा थी, कि बच्चे या घर के छोटे सदस्य सुबह उठकर और रात को सोने से पहले भी, बड़ों को पांव छूकर नमस्ते करते थे। उनका आशीर्वाद लेते थे। अपने माता पिता दादा–दादी चाचा चाची इत्यादि जो भी बड़े बुजुर्ग घर में होते थे, उन सबका आशीर्वाद लेते थे।''

अब यह परंपरा बहुत कम बची है। कहीं कहीं देखने को मिलती है। क्योंकि आजकल अधिकांश बच्चे जो पश्चिमी सभ्यता से प्रभावित हैं, उन्होंने अपनी बहुत सी भारतीय परंपराएं छोड़ दी हैं, जिसका दुष्परिणाम भी वे भोग रहे हैं। ''बड़ों के पांव छूने और उनका आशीर्वाद लेने से जो लाभ होते थे, आज वे लाभ लगभग नष्ट हो चुके हैं।''

परंतु जिन घरों में अभी भी बड़ों का सम्मान करने तथा आशीर्वाद लेने की यह परंपरा जीवित है, वे लोग इसका भरपूर लाभ ले रहे हैं। जैसे कि ''परिवार में मिल जुल कर संगठन में रहना, बड़ों का आदर सम्मान करना, उनके साथ सभ्यता से बातचीत करना, उनके आदेश निर्देश का पालन करना, उनके सामने असभ्यतापूर्ण व्यवहार नहीं करना, प्रतिदिन पांव छूकर उनका आशीर्वाद लेना, यह सब करने से बच्चों में बड़ों के प्रति एक सम्मान की भावना, और उनसे कुछ सीखने की भावना उत्पन्न होती थी। जिसके कारण से उनके सामने झूठ बोलना, चोरी करना, लड़ाई झगड़े करना, या अन्य प्रकार के कोई असभ्यतापूर्ण व्यवहार करना, इन सब दोषों से बच्चे, बचे रहते थे। बड़ों के आदेश निर्देश का पालन करने से बच्चों के अंदर चित्रकला, संगीतकला, वाद–विवाद की क्षमता, खेलकूद, दूसरों की सेवा, गौ, घोड़ा, कुत्ते आदि प्राणियों पर दया, सभ्यता, नम्रता, अनुशासन आदि अनेक गुणों और प्रतिभाओं का विकास होता था। जिससे बच्चे अपने जीवन में चहुंमुखी उन्नति सुख–समृद्धि एवं सफलता प्राप्त करते थे। उस पुरानी सभ्यता और परंपरा का आज फिर से स्मरण करें। यदि उसी आशीर्वाद लेने की परंपरा को आज फिर से जीवित करें, तो आजकल की नई पीढ़ी को भी ये सब लाभ मिलेंगे।''

अतः अपने माता–पिता एवं गुरुजनों का सम्मान करना सीखें। ''आपके ऊपर उनके बहुत उपकार हैं। ये उपकार आपको अच्छी प्रकार से तो तभी समझ में आएंगे, जब आप स्वयं किसी के माता पिता आदि बनकर उसका निर्माण करेंगे।'' ''जो बच्चे और विद्यार्थी अपने माता–पिता एवं गुरुजनों का सम्मान नहीं करते, उनके आदेश निर्देश का पालन नहीं करते, वे जीवन भर दुखी रहेंगे, बाद में पछताएंगे, और जीवन में अनेक क्षेत्रों में असफल हो जाएंगे। तनाव, अवसाद, छल, कपट, चोरी, रिश्वतखोरी और अन्य दोषों व रोगों के शिकार हो जाएंगे।'' क्योंकि आशीर्वाद क्या है, और यह कैसे आपकी उन्नति करता है? इस बात को समझने का प्रयास करें। ''आशीर्वाद एक प्रकार से बड़े लोगों की सहानुभूति, समर्थन और सहयोग का रूप है। उस से बच्चों का जो उत्साह बढ़ता है, जो आनंद बढ़ता है, जो निर्भयता बढ़ती है, जो सभ्यता, नम्रता, बुद्धिमत्ता आदि बढ़ती है, जो उत्तम कर्मों में रुचि बढ़ती है, वह अन्य प्रकार से नहीं बढ़ सकती।'' इसलिए प्रतिदिन बड़ों का आशीर्वाद लेकर ही सब कार्य करने चाहिएं।

''विशेष रूप से जब कोई खुशी का अवसर

हो, अर्थात आपने अपने कार्य क्षेत्र में, व्यवसाय आदि में कोई विशेष सफलता प्राप्त की हो, कोई पुरस्कार सम्मान आदि प्राप्त किया हो, कोई डिग्री प्राप्त की हो, विशेष धन संपत्ति कमाई हो, तब एक समारोह का आयोजन कर के अपने बड़ों का, माता पिता एवं गुरुजनों का विशेष सम्मान करना चाहिए।'' ''क्योंकि आपकी उस सफलता के पीछे उनका बहुत बड़ा सहयोग और समर्थन है। उन्हीं का तथा ईश्वर का भी आशीर्वाद है, जिससे आपको वह सफलता प्राप्त हुई है। इसलिए उनका कृतज्ञ होना और उनका सम्मान करना अतिआवश्यक है।''

सैनिक जब सीमा पर युद्ध करने जाता है, तो अपने माता पिता का आशीर्वाद लेकर जाता है, उससे वह अपने कार्य में सफलता प्राप्त करता है। जैसे श्रीराम चन्द्र जी महाराज ने वन में जाते हुए भी अपने बड़ों से आशीर्वाद लिया था। ''इसी प्रकार से जिस दिन बच्चे वार्षिक परीक्षा देने जाते हैं, उस दिन तो माता पिता का आशीर्वाद लेकर जाते हैं, क्योंकि उस दिन उनको अपना स्वार्थ दिखाई देता है। जबकि बच्चों को प्रतिदिन ऐसा करना चाहिए। अपने बड़ों का सम्मान करके प्रतिदिन उनका आशीर्वाद लेना चाहिए, जिससे उनका वर्तमान और भविष्य उत्तम बने।''

''आशीर्वाद आपका सुरक्षा कवच है। जब आप परीक्षा देने, यात्रा करने आदि किसी कार्य के लिए घर से निकलते हैं, तो अपने बड़ों से आशीर्वाद लेकर घर से निकलें।''

घर से निकलते समय बड़े लोग आपको आशीर्वाद देंगे। ''बेटा! सावधानी से जाना। अपने सामान का ध्यान रखना। रास्ते में सामान चोरी न हो जाए, दुर्घटना न हो जाए। इस प्रकार से सावधानी से यात्रा करना। अच्छे ढंग से, शांति और ईमानदारी से परीक्षा देना। घबराना नहीं, सब प्रश्नों का उत्तर बुद्धिमत्ता से लिखना। दूसरों की नकल नहीं करना। किसी के साथ झगड़ा नहीं करना। प्रेम और सभ्यता से सबके साथ व्यवहार करना। जाओ, अपने उद्देश्य में तुम अवश्य सफल होगे।'' इस प्रकार से बड़े लोग आशीर्वाद देते हैं। सब सावधानियां बताते हैं, और बुराइयों से बचने को कहते हैं। अच्छे काम ईमानदारी से करने को कहते हैं।

''घर से चलते समय बड़ों से उक्त प्रकार का आशीर्वाद लेने से, व्यक्ति के अंदर वह संस्कार बन जाता है, और उसे हर समय उक्त गलतियां करने से बचाता है। इसी को 'सुरक्षा कवच' कहते हैं।'' ''चाहे बड़े लोग आपके साथ में हों, या न हों, चाहे आप देश में हों, या विदेश में, बड़ों का आशीर्वाद सदा आपकी रक्षा करता है। अतः बड़ों का आशीर्वाद अवश्य लेवें।''

''जो लोग इस प्रकार से बड़ों का आशीर्वाद लिए बिना घर से निकलते हैं, वे रास्ते में, व्यवसाय में, परीक्षा आदि कार्यों में तरह तरह की लापरवाही करते हैं, और अनेक प्रकार की दुर्घटनाओं से ग्रस्त होकर बहुत से दुख भोगते हैं।'' ''इसलिए दुर्घटनाओं तथा दुखों से बचने के लिए, एवं जीवन में अपने कार्यों में सफलता प्राप्त करने के लिए, प्रतिदिन बड़ों का आशीर्वाद अवश्य लें, तथा सुरक्षित रहें।''

यदि आप जीवन में सुखी होना चाहते हैं तो अच्छे लोग ढूँढें
या लोगों में अच्छाई ढूँढें
अन्यथा आप सुख से नहीं जी पायेंगे

मोक्ष से संबंधित प्रश्न का उत्तर

–भगवान सिंह राठौर

प्रश्न कर्ता का प्रश्न है कि वैदिक सिद्धान्त अनुसार प्रत्येक मनुष्य को उसके स्वयं के द्वारा किये गये शुभाशुभ कर्मों के आधार पर ही अगली योनि अर्थात अगला जन्म मिलता है प्रश्नकर्ता के अनुसार जो आत्माएँ मोक्ष में चली जाती हैं तथा मोक्ष की निश्चित अवधि तक मोक्ष में ही रहती हैं मोक्ष में रहने वाली मुक्त आत्मायें मोक्ष की अवधि में कोई भी कर्म नहीं कर सकती। तो मोक्ष में रहने वाली उन मुक्त आत्माओं की अगली योनि अर्थात अगला जन्म मिलने का प्रश्न ही नहीं उठता। क्योंकि वे मोक्ष की अवधि में किसी भी प्रकार का कोई भी कार्य नहीं कर सकती अर्थात मोक्ष में रहने वाली आत्माओं को अगली योनि किस आधार पर मिलेगी? कृपया विस्तार पूर्वक समझाइये–

उत्तर–प्रश्न कर्ता के प्रश्न के आधार पर मुक्त आत्मायें मोक्ष में रहते हुए किसी भी प्रकार का कर्म नहीं करती और न ही कर सकती हैं, तो फिर उन्हें बिना कर्म किये अगली योनि अर्थात अगला जन्म किस आधार पर मिलेगा? इसका उत्तर वैशेषिक दर्शन के सूत्र 05–02–18 में दिया गया है। सूत्र हैः तद्भावे संयोगाभावोऽप्रादुर्भावश्च मोक्षः। जब साधक सकाम कर्म करने बन्द कर देता है और जो सकाम कर्म किये थे उनको भोग लिया तथा पांच क्लेश समाप्त कर दिये तब सकाम कर्म शेष नहीं रहने से शरीर नहीं बनेगा और क्लेशों के नष्ट होने पर पुनः जन्म नहीं होता लेकिन पांच क्लेश नष्ट होने और मृत्यु के बीच के कालखंड में जीवात्मा जो सकाम कर्म करता है उसके आधार पर मोक्ष से लौटने के बाद आत्मा को योनि प्राप्त होती है और नई योनि में आत्मा बचे हुए सकाम कर्मों को भोगता है।

मित्रता किन से करें

उन व्यक्तियों के साथ मित्रता करें जो–आयु, बुद्धि, ज्ञान, विवेक, शुद्ध आचार–व्यवहार, धैर्य, स्मृति, एकाग्रता आदि गुणों से युक्त हों। जिन्होंने ज्ञान और परिपक्वता प्राप्त कर ली है अथवा जिनकी परिपक्व और अनुभवी लोगों के साथ संगति है। जो शान्त स्वभाव वाले, चिन्ताओं से मुक्त तथा मानवोचित कर्तव्य को जानने वाले हैं। जो सबके साथ अच्छा व्यवहार करते हैं तथा सदा सबका कल्याण करने के लिए तैयार रहते हैं। सच्चरित्र का पक्ष लेने वाले तथा जिनका नाम और दर्शन शुभ माना जाता है।

किन लोगों के साथ मित्रता न रखें

जिन लोगों में ऊपर लिखित गुण न पाये जाएं तथा जो दूषित चरित्र वाले, पाप करने में रुचि रखने वाले, दूषित भाषा का प्रयोग करने व दूषित विचारों से युक्त हैं तथा जो दूसरों की निंदा व शिकायत करने वाले, झगड़ालू , लालची, दूसरों के गुणों से ईर्ष्या करने वाले, दूसरों को बदनाम करने वाले, चंचल मन व स्वभाव वाले, क्रूर, निर्दयी और अधर्मी लोग हैं, उनके साथ मित्रता कभी नहीं रखनी चाहिए।

वैदिक साधन आश्रम तपोवन

नालापानी देहरादून दूरभाष-0135-2787001

आत्म कल्याण का स्वर्णिम अवसर

यजुर्वेद, सामवेद पारायण एवं गायत्री यज्ञ का विशेष आयोजन

तदनुसारेण दिनांक-10 मार्च 2023 (शुक्रवार) से 19 मार्च 2023 (रविवार) तक

यज्ञ के ब्रह्मा - **डॉ० वेदपाल जी**

यज्ञ के संचालक - **स्वामी चित्तेश्वरानन्द जी महाराज**

वेद पाठ - **श्रीमद् दयानन्द आर्ष ज्योर्तिमठ गुरूकुल पौंधा के ब्रह्मचारियों द्वारा**

मान्यवर महोदय,

सादर् नमस्ते!

आप सबको यह जानकर हर्ष होगा कि पूर्व वर्षों की परम्परा का निर्वहन करते हुए **वैदिक साधन आश्रम तपोभूमि** (पहाड़ी पर) **यजुर्वेद, सामवेद पारायण एवं गायत्री यज्ञ** का आयोजन करने का निश्चय किया गया है। आपसे प्रार्थना है कि कार्यक्रम में सपरिवार भाग लेकर धर्म लाभ उठायें तथा ज्ञानार्जन, यश एवं पुण्य के भागी बनें।

कार्यक्रम सारणी

योग साधना	:	**प्रात: 4:30 बजे से 6:30 बजे तक**
यज्ञ	:	**प्रात: 7 बजे से 9 बजे तक**
प्रात:राश	:	**प्रात: 9 बजे से 9:30 बजे तक**
प्रवचन	:	**प्रात: 9:30 बजे से 11:30 बजे तक**
यज्ञ एवं प्रवचन	:	**सायं 3 बजे से 6 बजे तक**

आवास एवं भोजन की नि:शुल्क व्यवस्था तपोवन आश्रम द्वारा की जायेगी।

श्रद्धापूर्वक दिया गया दान ही स्वीकार किया जायेगा।

निवेदक

विजय कुमार आर्य	**प्रेमप्रकाश शर्मा**	**अशोक कुमार वर्मा**
अध्यक्ष	**सचिव**	**कोषाध्यक्ष**
09837444469	**09412051586**	**09412058879**

BASANTA MAL SAT PRAKASH

Manufactures of : All Kinds Shawls & Lohies

M : 094171-36756, 70877-54848

GHASS MANDI, LUDHIANA

हमारे पास बेबी सॉफ्ट शॉल, पूजा शॉल, स्टॉल शॉल, मिक्सचर लोई, जैकेट शॉल, कढ़ाई शॉल, कैशमीलोन प्लेन क्लॉथ, चैक शर्टिंग क्लॉथ में हर प्रकार की वैरायटी बनती है और रेट भी कम हैं। कृपया एक बार जरूर सम्पर्क करें।

ARYA TEXTILE

Manufactures of :
All Kinds Handloom Bed Sheets & Furnishing Fabrics

M : 98963-19774, 95412-88174, 98964-01919

Specialist in : BABY BLANKETS & READYMADE CURTAINS

हम Readymade Curtains, Jachets, Guddad, Loi, Mat, Baby Soft Shawls, Baby Blankets, Acrylic Blankete, Rajai Khol (Dohar), Rajai, comforter, AC Set, Velvet Joda & 3D Bed Sheets, Dhari etc. आदि के निर्माता हैं। इसके अलावा मिंक व पोलर कम्बल (Mink & Polar) आदि भी बेचते हैं और रेट भी कम हैं। कृपया एक बार जरूर सम्पर्क करें।

Factory :
Opp. RK School,
Kutani Road, Panipat-132103

PREMIUM QUALITY

Shop :
665/4, Pachranga Bazar,
Panipat-132103

Baby Blankets / Mink Blankets / Quilts / Comforters / Jackets / Duvet Covers / Shawls / Fleece Blankets

MUNJAL SHOWA

हाई क्वालिटी शॉकर्स

TPM Certified

ISO / TS - 16949 - 2002 Certified

ISO - 14001 Certified

OHSAS - 18001 Certified

मुंजाल शोवा लिमिटेड भारत की प्रमुख शॉक एब्जॉर्बर्स बनाने वाली कंपनी है जिसकी रेंज फ्रन्ट फोर्कस, स्ट्रट्स (गैस चार्जड और कन्वेन्शनल) और गैस स्प्रिंगस की टू व्हीलर/फोर व्हीलर उद्योगों को उपलब्ध कराती है। कंपनी गुणवत्ता और सुरक्षा के उच्चतम मानकों के अनुरूप अपने सभी उत्पादों का निर्माण करती है। कंपनी के उत्पाद आरामदायक और सुरक्षित सवारी देते हैं और ये टिकाऊ और विश्वसनीय भी हैं। मुंजाल शोवा लिमिटेड, QS 9000, TS–16949, ISO 14001, OHSAS 18001 और TPM प्रमाणित कंपनी है। मुंजाल शोवा के तीन मैन्युफैक्चरिंग प्लॉट हैं – गुड़गाँव, मानेसर (हरियाणा) और हरिद्वार (उत्तराखण्ड)। मुंजाल शोवा लिमिटेड का शोवा कार्पोरेशन जापान के साथ तकनीकी और वित्तीय सहयोग करार है ।

हमारे उत्पाद

- स्ट्रट्स/गैस स्ट्रट्स
- शॉक एब्जॉर्बर्स
- फ्रन्ट फोर्कस
- गैस स्प्रिंगस/विन्डो बैलेन्सर्स

हमारे ख्यातिप्राप्त ग्राहक

Hero HONDA HONDA MARUTI SUZUKI YAMAHA

मुंजाल शोवा लिमिटेड

प्लॉट नं. 9–11, मारुति इंडस्ट्रियल एरिया
गुड़गाँव–122015, हरियाणा
दूरभाष :
0124–2341001, 4783000, 4783100
ईमेल : msladmin@munjalshowa.net
वेबसाइट : www.munjalshowa.net

MUNJAL SHOWA

डाक पंजीयन UA/DO/DDN/75/2021-2023 समाचार पत्र पंजीयन 51900/88

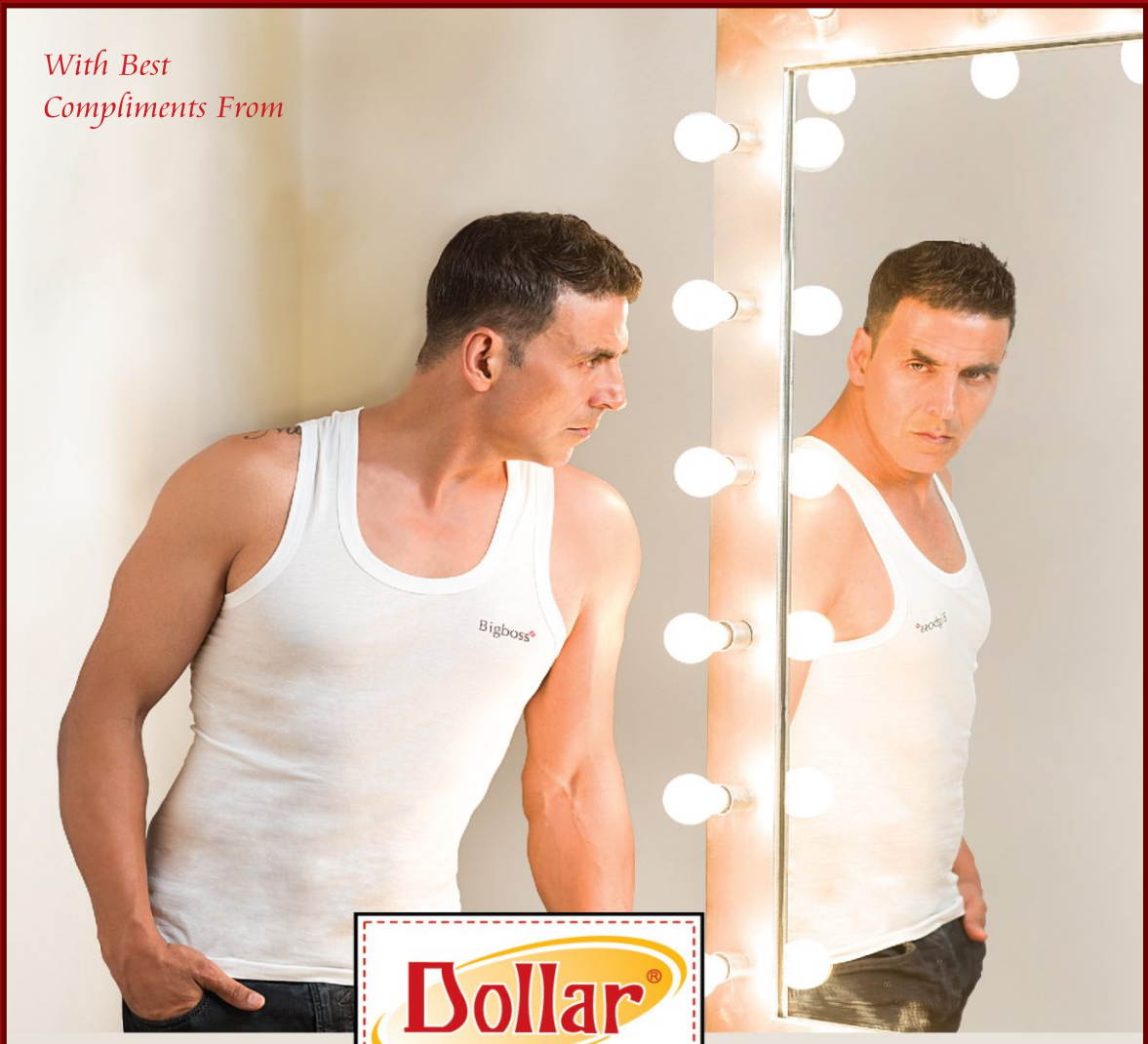

सरस्वती प्रेस, देहरादून, ई-मेल : akhilg333@gmail.com

वैदिक साधन आश्रम सोसाइटी के लिए प्रकाशक मुद्रक प्रेम प्रकाश द्वारा सरस्वती प्रेस, 2, ग्रीन पार्क, निरंजनपुर, देहरादून–248001 (उत्तराखण्ड) से मुद्रित एवं वैदिक साधन आश्रम सोसाइटी (रजि.), नालापानी, देहरादून (उत्तराखण्ड) से प्रकाशित।

संपादक– कृष्णकान्त वैदिक शास्त्री